وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۖ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨٣﴾

(८३) तथा जब वह रसूल की ओर उतारे हुए (संदेश) सुनते हैं, तो आप उनकी आखों से बहते अश्रु की धारा को देखते हैं, इस कारण से कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया। वह कहते हैं हे हमारे प्रभु ! हम मुसलमान हो गये। बस तू हमें भी साक्षियों में लिख ले।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَن يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿٨٤﴾

(८४) तथा हमें क्या है कि अल्लाह तथा उस सत्य के प्रति विश्वास न करें जो हमारे पास आया है तथा यह आशा न करें कि हमारा पोषक हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।[1]

---

[1]इथोपिया (हब्शा) में जहाँ मुसलमान अपने मक्की युग में दो बार हिजरत (प्रस्थान) करके गये। असहमा: नजाशी का राज्य था, यह ईसाई देश था। यह आयत इथोपिया के निवासी ईसाईयों के बारे में उतरी है परन्तु कथनों के आधार पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अम्र बिन उमैया जमरी को अपना पत्र देकर नजाशी के पास भेजा था, जो उन्होंने जाकर उसे सुनाया। नजाशी ने वह पत्र सुन कर इथोपिया में रह रहे प्रवासी मुसलमानों तथा आदरणीय जाफ़र पुत्र अबू तालिब को अपने पास बुलाया तथा अपने विद्वानों, पुजारियों, पादरियों आदि को भी एकत्रित कर लिया, फिर आदरणीय जाफ़र को क़ुरआन करीम पढ़ने का आदेश दिया। आदरणीय जाफ़र ने सूर: मरियम पढ़ी, जिसमें आदरणीय ईसा के चमत्कारिक जन्म तथा उनके भक्तत्व तथा रिसालत (दूतत्व) का वर्णन है, जिसे सुनकर वे बड़े प्रभावित हुए तथा आखों से अश्रु प्रवाहित हो गये एवं ईमान ले आये। कुछ लोग कहते हैं कि नजाशी ने अपने कुछ धर्मज्ञों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा था। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन सुनाया तो उनकी आंखों से अश्रु की धारा प्रवाहित हो गयी तथा ईमान ले आये। (फ़तहुल क़दीर) इन आयतों में क़ुरआन करीम सुनकर उन पर जो प्रभाव हुआ, उसका चित्रण किया गया है। तथा उनके विश्वास करने का वर्णन है पवित्र क़ुरआन में अन्य स्थानों पर भी ईसाईयों के इस प्रकार ईमान लाने के वर्णन हैं। जैसे

﴿وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ﴾ [آل عمران: ١٩٩]

(८५) तोअल्लाह ने उनकी इस प्रार्थना के कारण ऐसे उद्यान दिये जिनके नीचे नहरें प्रवाहित हैं, जिसमें सदा निवास करेगें तथा यही सदाचारियों का प्रत्युपकार है।

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٥﴾

(८६) तथा जो अविश्वासी हो गये एवं हमारी आयतों को झुठला दिये वही नरकवासी हैं।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٨٦﴾

(८७) हे ईमानवालो ! उन पवित्र वस्तुओं को अवैध न बनाओ जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिये वैध बना दिया[1] तथा अतिक्रमण न करो,

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ

---

"नि:सन्देह अहले किताब में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह तथा उस किताब पर जो तुम पर उतारी गयी है तथा उस पर जो उन पर उतारी गयी थी ईमान रखते हैं तथा अल्लाह के समक्ष विनती करते हैं।" (*सूर: आले-इमरान-१९९*)

तथा हदीस में आता है कि जब नजाशी के निधन का समाचार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिला, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से कहा कि "(इथोपिया) हब्शा में तुम्हारे भाई का देहान्त हो गया है, उसकी नमाज़ पढ़ो।" अत: एक रेगिस्तान में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी नमाज़ जनाज़: (गायबाना) अदा फ़रमायी। (सहीह बुख़ारी मनाकिबुल अन्सार व किताबुल जनाएज़, सहीह मुस्लिम किताबुल जनाएज़)। एक अन्य हदीस में ऐसे अहले किताब के विषय में जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत (दूतत्व) पर ईमान लाये, बताया गया है कि उन्हें दुगना प्रतिफल मिलेगा। (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म वल निकाह)

[1]हदीस में आता है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा कहने लगा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ! जब मैं मांस खाता हूँ तो सम्भोग की इच्छा प्रबल हो जाती है, इसलिए मैंने अपने ऊपर मांस हराम (निषेध) कर लिया है, जिस पर यह आयत उतरी। सहीह त्रिमिजी, अलबानी, भाग ३ पृष्ठ ४६) इसी प्रकार उतरने के कारण के अतिरिक्त अन्य कथनों से सिद्ध है कि कुछ सहचर संयम तथा आराधना के लिए कुछ वैध वस्तुओं से (जैसे स्त्रियों से विवाह करने, रात के समय सोने तथा दिन के समय खाने-पीने से) रुकना चाहते थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसकी सूचना मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा करने से रोका तथा मना किया। आदरणीय उस्मान बिन मज़ऊन भी अपनी पत्नी से अलग रहने लगे थे,

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٧﴾

नि:सन्देह अल्लाह अतिकारियों से प्रेम नहीं करता।

وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८८) तथा अल्लाह (तआला) ने जो चीज़ें तुम्हें दी हैं उनमें से वैधानिक रूचिकर वस्तुऐं खाओ तथा अल्लाह तआला से डरो, जिस पर तुम ईमान रखते हो।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ

(८९) अल्लाह तआला तुम्हारी सौगन्धों में बेकार सौगन्धों पर तुमको नहीं पकड़ता। परन्तु पकड़ उसकी करता है तुम जिन सौगन्धों को दृढ़ कर दो।[1] उसका प्रायश्चित दस गरीबों को

---

उनकी पत्नी की शिकायत (उलाहना) पर उन्हें भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोका। (हदीस की किताबें)

अत: इस आयत तथा हदीस से ज्ञात हुआ कि अल्लाह की उचित की हुई वस्तु को निषेध कर लेना अथवा उससे वैसे ही बचना उचित नहीं है, चाहे उसका सम्बन्ध खान, पान से हो अथवा वस्त्र से हो अथवा प्रिय अथवा उचित इच्छाओं से हो।

**समस्या-** इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति किसी चीज़ को अपने ऊपर निषेध कर लेगा तो वह निषेधित नहीं होगी, सिवाये पत्नी के। परन्तु इस अवस्था में कुछ विद्वानों का कथन है कि अपनी सौगन्ध का प्रायश्चित करना होगा तथा कुछ के निकट प्रायश्चित आवश्यक नहीं। इमाम शौकानी कहते हैं कि सहीह हदीस से इसी बात की पुष्टि होती है, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस अवस्था में किसी को सौगन्ध का दण्ड अदा करने का आदेश नहीं दिया है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि इस आयत के पश्चात अल्लाह तआला ने सौगन्ध के प्रायश्चित का वर्णन किया है जिससे ज्ञात होता है कि किसी अवर्जित पदार्थ का वर्जित कर लेना यह सौगन्ध के समान है जो प्रायश्चित देने का कारण है। परन्तु यह तर्क सहीह हदीस की उपस्थिति में नगण्य है। वही उचित है जो इमाम शौकानी का कथन है।

[1]शपथ को अरबी भाषा में हलफ़ अथवा यमीन कहते हैं जिनका बहुवचन अहलाफ़ तथा ऐमान है। शपथ के तीन भेद होते हैं : (१) लग़्व (२) ग़मूस (३) मोअक़्क़द। (१) लग़्व वह सौगन्ध है जो मनुष्य बात-बात पर स्वाभाविक रूप से बिना किसी प्रयत्न तथा ध्येय के खाता रहता है। इसमें कोई पकड़ न होगी। (२) ग़मूस वह झूठी सौगन्ध है जो मनुष्य धोखा देने या छल के लिए खाता है। यह महापाप है, अपितु अति महापाप है परन्तु इस का कोई प्रायश्चित नहीं है। (३) मोअक़्क़द वह सौगन्ध है जो मनुष्य अपनी

खाना देना है मध्यम श्रेणी का, जो अपने घरवालों को खिलाते हो ।[1] अथवा उनको वस्त्र देना ।[2] अथवा एक दास अथवा दासी स्वतन्त्र करना है ।[3] तथा जिससे यह न हो सके वह तीन दिन रोज़े रखे ।[4] यह तुम्हारी सौगन्धों का प्रायश्चित है जबकि तुम सौगन्ध खा लो तथा अपनी सौगन्धों को ध्यान में रखो । इस प्रकार अल्लाह तआला तुम्हारे लिए अपने आदेशों का वर्णन करता है, ताकि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो ।

عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۸۹﴾

---

बात में बल तथा परिपक्वता के लिए जानबूझ कर खाये । इस प्रकार की सौगन्ध को यदि तोड़ेगा तो उसका वह प्रायश्चित अदा करेगा, जिसका आगे आयत में वर्णन है ।

[1]इस खाने की मात्रा के लिए कोई एक सही कथन नहीं है । इसलिए मतभेद है । परन्तु इमाम शाफ़ई ने उस हदीस से तर्क देते हुए, जिसमें रमजान में रोज़े की स्थिति में पत्नी से सम्भोग करने का जो प्रायश्चित है, लगभग आधा किलो प्रति निर्धन का खाना निर्धारित किया है । क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसललम ने उस व्यक्ति को पत्नी के साथ रोजे की अवस्था में सम्भोग करने के प्रायश्चित स्वरूप १५ साआ खजूरें दिलवायीं थीं । जिन्हें साठ निर्धनों में बाँटा गया था । एक साआ में चार मुद्द तथा एक मुद्द (लगभग छ: सौ ग्राम होता है ) इस आधार पर बिना शोरबे के सालन के दस ग़रीबों को देने के लिए दस मुद्द (अर्थात छ: किलो) भोजन प्रायश्चित होगा । (इब्ने कसीर)

[2]वस्त्र के विषय में भी मतभेद है । प्रत्यक्ष रूप से तात्पर्य वस्त्र का जोड़ा है जिसमें मनुष्य नमाज़ पढ़ सके । कुछ विद्वान ने भोजन तथा वस्त्र दोनों के लिए प्रथा तथा प्रचलन को विश्वस्त माना है ।

[3]कुछ विद्वानों ने चूक से हत्या के प्रायश्चित पर अनुमान करके दास तथा दासियों के लिए ईमान का प्रतिबन्ध लगाया है । इमाम शौकानी कहते हैं, आयत सामान्य है जिसके अन्तर्गत मोमिन एवं काफ़िर दोनों आते हैं ।

[4]अर्थात जिस व्यक्ति को ऊपर के तीनों विषयों में से किसी की शक्ति न हो वह तीन दिन रोज़ा रखे । कुछ धर्मज्ञ निरन्तर रोज़े (व्रत) रखने के पक्ष में हैं तथा कुछ के विचार से दोनों प्रकार उचित हैं ।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنصَابُ وَالْأَزْلَٰمُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَٰنِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩٠﴾

(९०) हे ईमानवालो ! मदिरा एवं जुआ तथा मूर्तियों के स्थान एवं पाँसे गन्दे शैतानी काम हैं, अत: तुम इससे अलग रहो ताकि सफल हो जाओ ।[1]

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَٰنُ أَن يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَٰوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَوٰةِ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّنتَهُونَ ﴿٩١﴾

(९१) शैतान चाहता ही है कि मदिरा तथा जुआ द्वारा तुम्हारे बीच शत्रुता एवं द्वेष डाल दे तथा तुम्हें अल्लाह की याद तथा नमाज़ से रोक दे तो तुम रुकते हो या नहीं ।[2]

وَأَطِيعُوا۟ اللَّهَ وَأَطِيعُوا۟ الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا۟ ۚ فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوٓا۟ أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَٰغُ الْمُبِينُ ﴿٩٢﴾

(९२) अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल का अनुसरण करो और सतर्क रहो तथा यदि तुमने मुहँ फेरा तोजान लो कि हमारे रसूल पर खुला संदेश पहुँचा देना है ।

---

[1]यह मदिरा के सम्बन्ध में तीसरा आदेश है । प्रथम दो आदेशों में उसे स्पष्टरूप से निषेधित नहीं किया गया है । परन्तु यहाँ उसके साथ जुआ, पूजा स्थलों अथवा थानों तथा शगुन के तीरों को दूषित एवं राक्षसी कार्य घोषित करके स्पष्ट शब्दों में इन सभी से सुरक्षित रहने का आदेश दे दिया गया है । इसके सिवाये इस आयत में मदिरा एवं जुआ के संदर्भ में कुछ अधिक क्षति का वर्णन करके प्रश्न किया गया है कि अभी भी रूकेंगे या नहीं मुसलमान इससे अल्लाह का उद्देश्य समझ गये तथा उसे नित्य के लिये अवैध मान लिया एवं कहा कि انتهينا ربنا हमारे पालनहार हम मान गये, (मुसनदे अहमद भाग २ पृष्ठ ३५१) परन्तु आधुनिक बुद्धिमान कहते हैं कि अल्लाह ने मदिरा को वर्जित कहाँ कहा है ? इस बुद्धि पर रोना चाहिए । अर्थात मदिरा को दूषित तथा राक्षसी कार्य बताकर उससे रुकने का आदेश देना तथा उसे सफलता का हेतु बताना बुद्धिमानों के विचार में निषेध के लिये प्रयाप्त नहीं । इसका अभिप्राय यह हुआ कि अल्लाह के समीप दूषित कार्य भी उचित है, राक्षसी कार्य भी उचित है । जिसके त्याग का आदेश दे वह भी उचित है तथा जिसके संदर्भ में कहे कि उसका करना असफलता तथा उसका त्याग सफलता का हेतु है वह भी उचित إنا لله و إنا إليه راجعون ऐसे बोध से हज़ार बार शरण, तथा थू है ऐसे बोध पर ।

[2]यह जुआ तथा मदिरा की अन्य सामाजिक एवं धर्मिक हानियाँ हैं जिनके वर्णन की आवश्यकता नही, इसी कारण मदिरा को सभी कुकर्मों की जननी कहा जाता है तथा जुआ भी ऐसी ही बुरी लत है । यह मनुष्य को किसी काम का नहीं रखता तथा अधिकतर धनवानों एवं वंशगत जागीरदारों को भीखारी तथा दरिद्र बना देता है । हमें अल्लाह दोनों से सुरक्षित रखे ।

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۹۳﴾

(९३) ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों तथा पुण्य का कार्य करते हों, उस चीज़ में कोई पाप नहीं जिसको वह खाते-पीते हों, जबकि वह लोग अल्लाह से डरते हों तथा ईमान रखते हों तथा पुण्य का कार्य करते हों, फिर परहेज़गारी करते हों तथा अत्यधिक पुण्य का कार्य करते हों, अल्लाह ऐसे पुण्यकर्ताओं से प्रेम करता है ।[1]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۴﴾

(९४) हे ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) कुछ शिकार के द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेता है ।[2] जिन तक तुम्हारे हाथ तथा तुम्हारे भाले पहुँच सकेंगे ।[3] ताकि अल्लाह (तआला) मालूम कर ले कि कौन व्यक्ति उससे बिना देखे डरता है, जो व्यक्ति सीमा से बढ़ जायेगा उसे कठोर यातना है ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ

(९५) हे ईमानवालो ! जब तुम (हज अथवा उमर: का) एहराम बाँधे रहो तो शिकार न

---

[1]मदिरा के निषेध के पश्चात नबी के सहचरों के मन में यह बात आई कि हमारे कई साथी लड़ाईयों में मारे गये अथवा स्वभाविक मौत मरे जब कि वह मदिरा पान कर रहे थे । तो इस आयत में इस संशय का निवारण कर दिया गया, कि इनका अन्त विश्वास एवं संयम पर ही हुआ क्योंकि उस समय मदिरा पान वर्जित नहीं हुआ था ।

[2]शिकार अरबों के जीवन यापन का एक विशेष साधन था, इसलिए एहराम की अवस्था में इसे निषेध करके उनकी परीक्षा ली गयी । विशेष रूप से हुदैबिया में निवास के समय में शिकार अधिक रूप से सहाबा के निकट आते, किन्तु उन्हीं दिनों में यह चार आयतें उतरीं, जिसमें उससे सम्बन्धित आदेश दिये गये ।

[3]निकट के शिकार तथा छोटे जीव-जन्तु सामान्य रूप से हाथ ही से पकड़ लिए जाते हैं तथा दूर के अथवा बड़े पशुओं के लिए तीर तथा भाले प्रयोग किये जाते हैं । इसलिए केवल इन दोनों का यहाँ वर्णन किया गया है । परन्तु तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार से तथा जिस चीज़ से भी शिकार किया जाये, एहराम की अवस्था में निषेध है ।

مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِۦ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًۢا بَٰلِغَ ٱلْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسَٰكِينَ أَوْ عَدْلُ ذَٰلِكَ صِيَامًا

करो[1] और तुममें से जो भी जान बूझ-कर उसे मारे[2] तो उसे क्षतिपूर्ति करना है उसी के समान[3] पालतू पशु से जिसका निर्णय तुम में से दो न्यायकारी करेंगे[4] जो बलि के लिये काअबा

---

[1]इमाम शाफ़ई ने इससे यह भाव लिये हैं कि इनसे केवल उन जानवरों की हत्या ली गई है, जिनका माँस खाया जाता है। धरती के अन्य पशुओं का शिकार वह उचित मानते हैं। परन्तु अधिक विद्वानों का विचार यह है कि इसमें खाने योग्य अथवा अयोग्य में कोई भेद नहीं है। इसमें दोनों प्रकार के जानवर सम्मिलित हैं। परन्तु उन हानिकारक जीवों की हत्या करना उचित है जिनका वर्णन हदीस में आया है तथा वे पाँच हैं कौआ, चील, बिच्छू, चूहा तथा पागल कुत्ता। (सहीह मुस्लिम किताबुल हज, बाब मायनदुबो लिल मुहरिम व ग़ैरेही कतलुहु मिन-द्वाब्बे फ़िल हिल्ले वल हरमे, तथा मुअता इमाम मालिक) आदरणीय नाफ़ेअ से साँप के विषय में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि उसको मारने में कोई मतभेद नहीं है। इब्ने कसीर तथा इमाम अहमद एवं इमाम मालिक तथा अन्य आलिमों ने भेड़िये, हिंसक जन्तु, चीते, सिंह को बावले कुत्ते के समान एहराम की अवस्था में इनको मारने की आज्ञा दी है। (इब्ने कसीर)

[2]"जान-बूझ कर" के शब्द से कुछ विद्वानों ने यह तर्क निकाला है कि बिना प्रयत्न के यदि भूल से अंजाने में हत्या हो जाये तो उसमें प्रतिशोध नहीं है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के निकट इच्छित अथवा अनेच्छित दोनों अवस्थाओं में पशु हत्या करने पर फ़िदिया (प्रतिशोध) देना होगा। जान बूझ कर की बात परिस्थितियों के अनुसार है प्रतिबन्ध के रूप में नहीं है।

[3]समान पशु से तात्पर्य प्रकृति अर्थात शरीर तथा श्रेणी में समान होना है मूल्य में समान होना नहीं है जैसाकि हनफ़ी समुदाय में है। जैसाकि यदि हिरण की हत्या हुई तो उसके समान बकरी है। गाय के सामन नील गाय है आदि। परन्तु जिस जन्तु का समतुल्य नहीं मिल सकता हो, वहाँ उस मूल्य के रूप में प्रतिशोध लेकर मक्का पहुँचा दिया जायेगा। (इब्ने कसीर)

[4]कि हत (हत्या किये गये) जानवर के समान अमूक जानवर है तथा यदि उसके समान नहीं है अथवा उसके समान उपलब्ध नहीं है तो उसका उतना मूल्य है। उस मूल्य से अनाज ख़रीद कर मक्का के भिखारियों में बाँट दिया जायेगा। प्रति भिखारी एक मुद्द अर्थात छः सौ ग्राम के हिसाब से से वितरण किया जायेगा। हनफ़ी समुदाय में दो मुद्द प्रति भिखारी है अर्थात एक किलो दो सौ ग्राम है।

لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

पहुँचाया जायेगा[1] अथवा प्रायश्चित स्वरूप कंगालों को भोजन देना है या उसके बराबर रोज़े (व्रत) रखना है[2] ताकि अपने किये का दण्ड चखो। जो पहले हो चुका अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया तथा जो इस (निषेधाज्ञा) के पश्चात् ऐसा फिर करेगा अल्लाह उससे बदला लेगा। अल्लाह शक्तिशाली बदला लेने वाला है।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيٓ

(९६) तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार पकड़ना तथा खाना वैध किया गया है।[3] तुम्हारे प्रयोग के लिए तथा यात्रियों के लिए, एवं धरती का शिकार अवैध किया गया जब तक तुम एहराम

---

[1]यह प्रतिशोध जानवर अथवा उसका मूल्य काअबा पहुँचाया जायेगा तथा काअबा से तात्पर्य हरम है। (फ़तहुल क़दीर) अर्थात उनका वितरण हरम मक्का में रहने वाले निर्धन में होगा।

[2] او (अथवा) अधिकार देने के लिए आया है अर्थात निर्धनों को भोजन कराना अथवा उसके बराबर रोज़े रखना दोनों में से कोई एक कार्य करना उचित है। हत जानवर के अनुसार भोजन कराने में जिस प्रकार से कमी अथवा अधिकता होगी उसी प्रकार रोज़ों में भी कमी अथवा अधिकता होगी। जैसे एहराम पहने हुए व्यक्ति ने हिरन मारा तो उसके समान बकरी है, यह फ़िदिया हरम मक्का में बलि दिया जायेगा। यदि यह न मिले तो आदरणीय इब्ने अब्बास (रजी अल्लाह अन्हुमा) के अनुसार छः निर्धनों को भोजन अथवा तीन रोज़े रखने होंगे। यदि उसने बारहसिंगा, साँभर अथवा इस जैसा कोई पशु मारा होगा तो उसकी समतुल्य गाय है, यदि यह उपलब्ध न हो अथवा इसका मूल्य अदा करने की शक्ति न हो तो बीस निर्धनों को खाना खिलाना होगा अथवा बीस दिन रोज़े रखने होंगे अथवा शुतुरमुर्ग जैसा पशु मारा जाये तो उसका समतुल्य ऊंट है तो उसके उपलब्ध न होने में तीस निर्धनों को भोजन कराना अथवा तीस दिन के रोज़े रखना होंगे। (इब्ने कसीर)

[3] صيد (सैद) से तात्पर्य जीवित पशु तथा طعامه (तआमुहु) से तात्पर्य मृत (मछली आदि) है जिसे समुद्र अथवा नदी बाहर फेंक दे अथवा पानी पर उतर जाये। जिस प्रकार से हदीस में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि समुद्र का मृत जन्तु वैध है। (विस्तृत जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर, तथा नैलुल औतार आदि)

إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾

की हालत में हो। तथा अल्लाह (तआला) से डरो जिसके पास एकत्रित किये जाओगे।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

(९७) अल्लाह ने काअबा को जो सम्मानित गृह है, लोगों के लिये स्थिरता का कारण बनाया तथा सम्मानित महीने को तथा हरम में बलि दिये जाने वाले पशुओं को भी तथा उन पशुओं को भी जिनके गले में पट्टे हों।[1] यह इसलिए ताकि तुम इस बात पर विश्वास कर लो कि नि:सन्देह अल्लाह (तआला) आकाशों तथा धरती के अन्दर की चीज़ों का ज्ञान रखता है एवं नि:सन्देह अल्लाह सभी विषय को भली-भाँति जानता है।

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾

(९८) तुम विश्वास करो कि अल्लाह तआला दण्ड भी कठोर देने वाला है तथा अल्लाह (तआला) अति क्षमाशील एवं अति कृपालु भी है।

مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾

(९९) रसूल का दायित्व तो मात्र पहुँचाना है। तथा अल्लाह (तआला) सभी कुछ जानता है जो कुछ तुम व्यक्त करते हो तथा जो कुछ छिपा रखते हो।

[1]काअबा को बैतुल हराम इसलिए कहा जाता है कि उसकी सीमा के अन्दर शिकार करना, वृक्ष काटना आदि निषेध है। इसी प्रकार यदि इसमें पिता के हत्यारे से भी सामना हो जाये, तो उसे छेड़ा नहीं जाता था। इसे قياما للناس (लोगों के खड़े होने तथा निर्वाह का कारण) कहा गया है। जिसका अर्थ है कि इसके द्वारा मक्का के निवासियों के प्रबन्ध भी ठीक हैं तथा उनके निर्वाह की आवश्यकताओं की उपलब्धि का साधन भी है। इसी प्रकार हराम महीने (रजब, जुलकाअद:, जुलहिज्जा तथा मोहर्रम) तथा हरम में जाने वाले पशु (हदी तथा कलायेद) भी लोगों के निर्वाह के साधन हैं क्योंकि इन सभी से मक्का निवासियों को वर्णित लाभ प्राप्त होते थे।

(१००) आप कह दीजिए कि अपवित्र तथा पवित्र समान नहीं यद्यपि आपको अपवित्र की अधिकता भली लगती हो ।[1] अल्लाह (तआला) से डरते रहो हे बुद्धिमानो, ताकि तुम सफल हो ।

قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾

(१०१) हे ईमानवालो ! ऐसे विषय में प्रश्न न करो जिसे व्यक्त कर दिया जाये तो तुम्हें बुरा लग जाये और यदि क़ुरआन उतारे जाने के समय प्रश्न करोगे तो तुम्हारे ऊपर व्यक्त कर दिया जायेगा,[2] जो हो चुका अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया तथा अल्लाह क्षमाशील सहनशील है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾

(१०२) तुमसे पूर्व कुछ लोगों ने यही प्रश्न किया फिर उन्हें निभा न सके ।[3]

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾



---

[1]अपवित्र से तात्पर्य अवैध अथवा अधर्मी अथवा पापी अथवा विकृत तथा पवित्र से तात्पर्य वैध विश्वासी अथवा आज्ञाकारी अथवा अच्छी वस्तु अथवा यह सभी हो सकती हैं । अभिप्राय यह है कि जिस वस्तु में अपवित्रता होगी, वह अविश्वास हो, अवज्ञा हो, दुष्कर्म हो अथवा चीज़ें अथवा कथन हों, अधिक संख्या के उपरान्त उन वस्तुओं का सामना नहीं कर सकतीं, जिनमें पवित्रता होगी । यह दोनों किसी भी अवस्था में समान नहीं हो सकते । इसलिए कि अपवित्रता के कारण उस वस्तु का लाभ तथा शुभ समाप्त हो जाता है जबकि जिस वस्तु में पवित्रता होगी, उससे उसके लाभ तथा शुभ में और बढ़ोत्तरी होगी ।

[2]यह निषेधाज्ञा क़ुरआन के उतरने के समय थी, स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी सहावा को अधिक प्रश्न करने से रोकते थे । एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मुसलमानों में सबसे बड़ा अपराधी वह है जिसके प्रश्न करने के कारण कोई चीज़ अवैध हो गयी, जबकि उससे पूर्व वह वैध थी ।" (सहीह बुख़ारी, संख्या ७२८९, सहीह मुस्लिम अल फ़ज़ायेल बाव तौक़ीरुहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व तरको इक्सारे सुवालिहि)

[3]कहीं उस आलस्य के शिकार तुम न हो जाओ, जिस प्रकार एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "अल्लाह तआला ने तुम पर हज अनिवार्य किया है ।" एक व्यक्ति ने प्रश्न किया, "क्या प्रत्येक वर्ष ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मौन रहे । उसने अपने प्रश्न की तीन बार पुनरावृत्ति की । फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ

(१०३) अल्लाह ने आज्ञा नहीं दी है बहीर: की न साइब: की न वसील: की न हाम की[1] किन्तु

---

फ़रमाया, "यदि मैं हाँ कर देता तो तुम्हारे लिए प्रत्येक वर्ष हज करना अनिवार्य हो जाता, तो प्रत्येक वर्ष हज करना तुम्हारे लिए सम्भव नहीं होता।" (सहीह मुस्लिम किताबुल हज हदीस संख्या ४१२, मुसनद अहमद, सुनने अबू दाऊद, नसाई तथा इब्ने माजा) इसीलिए कुछ व्याख्याकारों ने عفا الله عنها का एक अर्थ यह भी वर्णित किया है कि जिस वस्तु का वर्णन अल्लाह तआला ने अपनी किताब में नहीं किया है, तो यह जान लो वह उन चीज़ों में है जिनको अल्लाह तआला ने क्षमा कर दिया है। इसलिए तुम भी उनके विषय में मौन हो जाओ, जिस प्रकार वह मौन है। (इब्ने कसीर) एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका भाव इन शब्दों में समझाया है।

« ذَرُونِي مَا تَرَكْتُمْ؛ فَإِنَّمَا أَهْلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ كَثْرَةُ سُؤَالِهِمْ، وَاخْتِلَافُهُمْ عَلَىٰ أَنْبِيَآءِهِمْ ».

"तुम्हें जिन विषयों के बारे में नहीं बताया गया है, तुम मुझसे उनके विषय में प्रश्न न करो, इसलिए कि तुमसे पूर्व के समुदायों के पतन का कारण उनके प्रश्नों की अधिकता तथा नबियों से मतभेद था।" (सहीह मुस्लिम किताबुल हज्ज)

[1]यह उन पशुओं के प्रकार हैं जो अरबवासी अपनी मूर्तियों के नाम पर मुक्त करते थे। इनकी विभिन्न व्याख्यायें की गयी हैं। आदरणीय सईद बिन मुसय्यिब के कथनानुसार सहीह बुख़ारी में इसकी व्याख्या निम्न रूप से संकलित की गयी है। बहीर:- वह पशु जिसका दूध दोहना छोड़ दिया जाता था तथा कहा जाता था कि यह मूर्तियों के लिए है। अत: कोई भी व्यक्ति उसके थनों को हाथ नहीं लगाता। साएब: वह पशु जिन्हें वे मूर्तियों के नाम छोड़ देते उन पर न सवारी करते न माल लादते। जैसे छुट्टे साँड जिन्हें हिन्दू धर्म में नन्दी कहते हैं उसी प्रकार छोड़ते थे। वसीला- वह ऊँटनी जिससे सर्वप्रथम मादा पैदा होती तथा पुन: दूसरी बार भी मादा होती (अर्थात एक मादा के पश्चात दूसरी मादा हुई तथा किसी नर के पैदा न होने के कारण मध्य में भेद न हुआ तो ऐसी उँटनियों को भी मूर्तियों के नाम स्वतन्त्र छोड़ दिया करते थे तथा हाम- वह नर ऊँट है जिसके द्वारा उसकी नस्ल से कई ऊँट पैदा हो चुके होते हैं, तो उनको भी मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते, उससे भी सवारी तथा भार वाहन का काम नहीं लेते तथा हामी पशु कहते। इस कथन में इस हदीस का भी वर्णन है कि सर्वप्रथम मूर्तियों के नाम पर पशु मुक्ति का काम अमर बिन आमिर ख़ुज़ाई ने किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि, "मैंने उसे नरक में अंतड़ियाँ खींचते हुए देखा।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-मायद:) आयत में कहा गया है कि अल्लाह तआला ने इन पशुओं को इस प्रकार से मुक्त करने की अनुमति नहीं दी है, क्योंकि उसने प्रत्येक दान-दक्षिणा तथा मनौती अपने लिए विशेष किया है। मूर्तियों के लिए चढ़ावा अथवा मनौती यह मूर्तिपूजकों की अपनी उपज

وَلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۖ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

काफ़िर (विश्वास रहित) अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाते हैं तथा उनमें अधिकतर बुद्धि नहीं रखते ।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلٰى مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ وَإِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा जब उनसे कहा गया कि उस (पवित्र क़ुरआन) तथा रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर आओ तोउन्होंने कहा कि जिस (रीति) पर हमने अपने पूर्वजों को पाया है वह हमें बस है यद्यपि उनके पूर्वज कुछ न जान रहे हों तथा सही मार्ग पर न हों ।

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۖ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ

(१०५) हे ईमानवालो ! अपनी चिन्ता करो, जब तुम सत्य मार्ग पर चल रहे हो, तो जो व्यक्ति भटक जाये उससे तुम्हारी कोई हानि नहीं ।[1] अल्लाह ही के पास तुम सभी को

---

है तथा मूर्तियों तथा देवताओं के नाम से पशु मुक्ति, प्रसाद चढ़ावा आज भी मूर्तिपूजकों में व्याप्त है तथा कुछ नाम के मुसलमानों में भी यह प्रचलित है । أعاذنا الله منه

[1]कुछ लोगों के मस्तिष्क में प्रत्यक्ष शब्दों से यह शंका उत्पन्न हुई कि अपना सुधार कर लिया जाये तो बस है । सत्कर्मों का आदेश देना तथा कुकर्मों से रोकना आवश्यक नहीं है। परन्तु यह अर्थ सहीह नहीं है । सत्कर्म का आदेश देने का कर्त्तव्य भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है । यदि एक मुसलमान यह कर्त्तव्य ही छोड़ देगा, तो इसे त्याग करने वाला सत्यमार्ग पर कब रह जायेगा ? जबकि क़ुरआन ने إذا اهتديتم (जब तुम स्वयं मार्गदर्शन पर चल रहे हो) के प्रतिबन्ध से प्रतिबन्धित कर दिया है । इसलिये जब आदरणीय अबूबक्र सिद्दीक (रज़ी अल्लाह अन्हु) के ज्ञान में यह बात आयी तो उन्होंने कहा, लोगों ! तुम आयत को ग़लत स्थान पर प्रयोग कर रहे हो, मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते सुना है कि "जब लोग बुराई होते हुए देख लें तथा उसके बदलने का प्रयत्न न करें तो निकट है कि अल्लाह तआला अपनी यातनाओं की पकड़ में ले ले ।" (मुसनद अहमद भाग १, पृ॰ ५, त्रिमिज़ी संख्या २१७८ अबू दाऊद संख्या ४३३८) इसलिए आयत का सही अर्थ यह है कि तुम्हारे समझाने के उपरान्त यदि लोग पुण्य का मार्ग न अपनायें अथवा बुराई से न रुकें, तो तुम्हारे लिए यह हानिकारक नहीं है, जबकि तुम स्वयं पुण्य पर दृढ़ स्थिर तथा बुराई से दूर रहो । परन्तु एक अवस्था में अच्छाई का आदेश देने तथा बुराई से रोकने को त्याग देना उचित है जब कोई व्यक्ति अपने अन्दर वह शक्ति न पाये तथा उससे

بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

जाना है। फिर वह तुम सब को बतला देगा जो कुछ तुम करते थे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) हे ईमानवालो ! जब तुम में किसी के निधन का समय हो तो वसीयत (रिक्थदान) के समय तुममें से दो विश्वस्त व्यक्ति को गवाह होना चाहिये [1] अथवा तुम्हारे सिवाये दो अन्य को यदि तुम धरती में यात्रा कर रहे हो तथा तुम पर मौत की विपदा आ जाये,[2] (शंका की दशा में) तुम दोनों (गवाहों) को (अपरान्ह) की नमाज़ के पश्चात रोकोगे फिर दोनो अल्लाह की शपथ लेंगे कि हम इस (गवाही) के बदले कोई मूल्य नहीं लेना चाहते[3] यद्यपि वह निकटवर्ती हो तथा हम अल्लाह की गवाही

---

उसके जीवन को ख़तरा हो। इस अवस्था में « فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهِ وَذٰلِكَ أَضْعَفُ الإِيمَانِ ». (जब तुम्हारी शक्ति यह आज्ञा न दे तो दिल में उसे बुरा जानो तथा यह कमज़ोर ईमान होने का प्रमाण है) के आधार पर इसका स्थान है। आयत भी इस अवस्था के लिए सर्मथन देती है।

[1]"तुममें से हों" का अभिप्राय कुछ ने यह लिया है कि मुसलमानों में से हों तथा कुछ ने कहा है कि موصي (उत्तरदान कर्त्ता) की जाति के हों। इसी प्रकार ﴿ءَاخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ﴾ में दोनों भाव होंगें अर्थात من غيركم से तात्पर्य जो मुसलमान न हों (अहले किताब) होंगें अथवा उत्तरदान कर्ता की जाति के अतिरिक्त अन्य जाति से।

[2]अर्थात यात्रा में ऐसा रोग हो जाये जिससे बचने की संभावना न हो तो वह यात्रा में दो न्यायकारी गवाह बनाकर जो वसीयत (प्ररिक्थ) करना चाहे कर दे।

[3]यदि मरने वाले के उत्तराधिकारी को यह संदेह हो जाये कि गवाहों ने विश्वासघात अथवा परिवर्तन किया है, तो वह नमाज़ के पश्चात अर्थात लोगों की उपस्थिति में उन से सौगन्ध लें तथा वह सौगन्ध खाकर कहें कि हम अपनी सौगन्ध के बदले दुनिया का कोई लाभ नहीं प्राप्त कर रहे हैं अर्थात झूठी सौगन्ध नहीं खा रहे हैं।

नहीं छुपा सकते यदि ऐसा करेंगे तो हम दोषी हैं।

(१०७) फिर यदि पता लग जाये कि वह दोनों (साक्षी) किसी पाप के पात्र हुये हैं [1] तो जिनके ऊपर पाप के पात्र हुए हैं उनमें से दो निकटतम सम्बंधी दोनों (साक्षियों) की जगह खड़े होगें[2] तथा अल्लाह की शपथ ग्रहण करेंगें कि हमारी गवाहियाँ इन दोनों की गवाहियों से अधिक सत्य है तथा हमने अनृत नहीं किया है, हम इस दशा में अत्याचारी होंगे।

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰٓ أَنَّهُمَا ٱسْتَحَقَّآ إِثْمًا فَـَٔاخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ ٱلْأَوْلَيَٰنِ فَيُقْسِمَانِ بِٱللَّهِ لَشَهَٰدَتُنَآ أَحَقُّ مِن شَهَٰدَتِهِمَا وَمَا ٱعْتَدَيْنَآ إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٠٧﴾

(१०८) यह निकटतम माध्यम है कि वे लोग सत्य गवाही दें अथवा उन्हें यह भय हो कि शपथों के पश्चात् पुन: शपथ उल्टी पड़ जायेगी [3]

ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِٱلشَّهَٰدَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَآ أَوْ يَخَافُوٓا۟ أَن تُرَدَّ أَيْمَٰنٌۢ بَعْدَ أَيْمَٰنِهِمْ ۗ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱسْمَعُوا۟ ۗ



---

[1] अर्थात झूठी सौगन्ध खायीं हैं।

[2] أَوْلَيَان यह أَوْلَى का द्विवचन है इस से तात्पर्य मृतक अर्थात रिक्थ दानकर्ता के समीप के दो सम्बंधी हैं। ﴿مِنَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ﴾ का अभिप्राय जिन पर पाप किया गया अर्थात मिथ्या शपथ ग्रहण करने का पाप करके जिनके मिलने वाले धन को हड़प लिया गया। الأَوْلَيَان या तो هُمَا लुप्त विषय का विधेय है अथवा ﴿يَقُومَانِ﴾ अथवा آخَرَان के सर्वनाम के बदले में है अर्थात दो निकटवर्ती संबन्धी उनकी मिथ्या शपथों के प्रतिरोध में अपनी शपथ देंगे।

[3] यह उस लाभ का वर्णन है जो उस आदेश में लुप्त है, जिसका वर्णन यहाँ किया गया है। वह यह कि इस विधि को अपनाने के कारण जिनके समक्ष वसीयत (उत्तरदान) की गयी थी सही गवाही देंगे क्योंकि उनको यह भय होगा कि यदि हमने इसमें किसी प्रकार का विश्वासघात अथवा परिवर्तन किया तो यह घटना स्वयं हमारे ऊपर आयेगी।

इस आयत के उतरने की घटना के विषय में बुदैल बिन अबू मरियम की घटना का वर्णन होता है कि वह सीरिया व्यापार के लिए गये थे, वहाँ बीमार तथा मरने के निकट हो गये, उनके पास सामान तथा चाँदी का एक प्याला था, जो उन्होंने दो ईसाईयों को सौंप कर अपने सम्बन्धियों तक पहुँचाने की वसीयत करके मर गये। यह दोनों वसीयत सुनने वाले जिनको सामान तथा प्याला सौंपा गया था, वापस आये तो प्याला बेचकर पैसे

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٨﴾

तथा अल्लाह से डरो और सुन लो कि अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता ।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾

(१०९) जिस (प्रलय) दिन अल्लाह (तआला) पैग़म्बरों (उपदेशकों) को एकत्रित करेगा, फिर पूछेगा कि तुमको क्या उत्तर मिला था ? वह उत्तर देंगें हमको कुछ नहीं मालूम,[1] मात्र तू ही परोक्षों का जानकार है ।

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى

(११०) जब अल्लाह कहेगा कि हे मरियम के पुत्र ईसा ! अपने तथा अपनी माँ के ऊपर मेरी

---

आपस में बाँट लिये तथा शेष सामान उत्तराधिकारियों को पहुँचा दिया । सामान में एक पत्र भी था जिसमें सामान की सूची थी, जिसके अनुसार एक चाँदी का प्याला नहीं था । उनसे जब कहा गया तो उन्होंने झूठी सौगन्ध खा ली, परन्तु बाद में पता चला कि उन्होंने अमुक सुनार के हाथ प्याला बेचा है । अत: उन्होंने उस ग़ैर मुस्लिमों के समक्ष सौगन्ध खाकर उनसे प्याले का मूल्य प्राप्त कर लिया । यह वर्णन प्रमाणत: क्षीण है । (त्रिमज़ी संख्या ३०५९ शोध अहमद शाकिर, मिस्र) परन्तु एक-दूसरे प्रमाण से आदरणीय इब्ने अब्बास से भी संक्षेप में यह कथित है जिसे हदीस के विशेषज्ञ अलवानी ने सही कहा है । (सहीह त्रिमिजी भाग ३, संख्या २४४९)

[1]नबियों के साथ उनके वर्ग ने जो कुछ किया होगा, वह अवश्य उन्हें याद होगा । परन्तु वह अपने ज्ञान का इंकार या तो प्रलय की प्रचंडता तथा अल्लाह तआला के भय तथा महानता के कारण कर देंगें अथवा इसका सम्बन्ध उनके मृत्यु के उपरान्त की अवस्था से होगा । इसके अतिरिक्त गुप्त बातों का ज्ञान केवल अल्लाह को ही है । इसलिए वह कहेंगें कि परोक्षज्ञ तू ही है । इससे ज्ञात हुआ कि नबी तथा रसूल को परोक्ष का ज्ञान नहीं होता, परोक्ष का ज्ञान मात्र अल्लाह ही को है । नबियों को जितना कुछ भी ज्ञान होता है, प्रथम तो उसका सम्बन्ध उन नियमों से होता है जो रिसालत के दायित्व की पूर्ति के लिए आवश्यक होते हैं । द्वितीय उनसे भी उनको वह्यी के द्वारा ही सूचित किया जाता है । यद्यपि अन्तर्यामी वही होता है जिसको प्रत्येक वस्तु का ज्ञान स्वयं हो, न कि किसी के बतलाने पर किसी चीज़ का ज्ञान प्राप्त हो जाये, उसे अन्तर्यामी नहीं कहा जाता, न वह अन्तर्यामी होता ही है । فافهم و تدبر ولا تكن من الغافلين (इस पर विचार करो निर्बोध न बनो)

وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدتُّكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٠﴾

कृपा को याद करो जब मैंने पवित्रात्मा[1] (जिब्रील) द्वारा तुम्हारी सहायता की। तुम पालने में तथा अधेड़ आयु में लोगों से बात करते रहे तथा जब हमने किताब एवं विज्ञान तथा तौरात एवं इंजील का ज्ञान दिया।[2] तथा जब तुम मेरी आज्ञा से पक्षी की प्रतिमा मिट्टी से बनाते थे और उसमें फूँकते थे तो मेरी आज्ञा से पक्षी बन जाता था तथा तुम मेरी आज्ञा से जन्मजात अन्धे एवं कोढ़ी को स्वस्थ कर रहे थे तथा मेरी आज्ञा से मृतकों को निकालते थे[3] तथा जब मैंने इस्राईल के पुत्रों को तुमसे रोका जब तुम उनके पास चमत्कार लाये[4] तो उनमें से काफ़िरों (विश्वासहीनों) ने कहा कि यह मात्र खुला जादू है।[5]

---

[1]इससे तात्पर्य आदरणीय जिब्रील हैं, जैसाकि *सूरः अल-बकरः* की आयत संख्या ८७ में गुज़रा।

[2]इसका स्पष्टीकरण *सूरः आले इमरान* की आयत संख्या ४८ में गुज़र चुका है।

[3]इन चमत्कारों का वर्णन भी उपरोक्त सूरः की आयत संख्या ४९ में गुजर चुका है।

[4]यह संकेत है उस षडयन्त्र की ओर जो यहूदियों ने आदरणीय ईसा की हत्या करने तथा फांसी पर चढ़ाने के लिए बनाया था। जिससे सुरक्षित करके अल्लाह तआला ने उनको आकाश पर उठा लिया। देखिये व्याख्या *सूरः आले इमरान* आयत संख्या ५४।

[5]प्रत्येक नबी के विरोधी अल्लाह तआला की आयात तथा चमत्कार को देख कर उसे जादू ही बताते रहे हैं। यद्यपि जादू तो एक माया तन्त्र है, जिसका नबियों से क्या सम्बन्ध हो सकता है ? बल्कि नबियों के हाथ से प्रकट चमत्कार सर्वशक्तिमान अल्लाह तआला की शक्ति तथा सामर्थ्य का द्योतक होते थे क्योंकि वह अल्लाह ही के आदेश से उसकी इच्छा तथा शक्ति से होते थे। किसी नबी की शक्ति में यह न था कि अल्लाह तआला की इच्छा तथा शक्ति के बिना कोई चमत्कार प्रदर्शित कर सकें। इसीलिए देख लीजिए आदरणीय ईसा के प्रत्येक चमत्कार के साथ अल्लाह तआला ने चार बार कहा कि, "प्रत्येक चमत्कार मेरे आदेश से हुआ है।" यही कारण है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मक्का के

(१११) और जबकि मैंने भक्तों को प्रेरणा दी ।[1] कि तुम मुझ पर तथा मेरे रसूलों पर ईमान लाओ । उन्होंने कहा, हम ईमान लाये तथा आप गवाह रहिए कि हम पूर्णरूप से आज्ञाकारी हैं ।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ ﴿١١١﴾

(११२) याद करो जब अनुयायियों ने कहा कि हे ईसा मरियम के पुत्र ! क्या तुम्हारा स्वामी हम पर आकाश से एक थाल उतार सकता है ?[2]

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالَ

---

मूर्तिपूजकों ने विभिन्न चमत्कार दिखाने की माँग की जिन का विवरण *सूर: बनी-इस्राईल* की आयत संख्या ९१ से ९३ तक में वर्णित हो चुका है, तो उसके उत्तर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ।

﴿ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا ﴾

"मेरा प्रभु पवित्र है (अर्थात वह तो इस क्षीणता से विहीन है कि वह यह चमत्कार न दिखा सके, वह तो दिखा सकता है, परन्तु उसकी इच्छा उसके अनुरूप है अथवा कब अनुरूप होगी ? इसका ज्ञान उसी को है उसी के अनुसार निर्णय करता है) परन्तु मैं तो केवल मानव पुरुष तथा रसूल (संदेष्टा) हूँ ।"

अर्थात मेरे अन्दर यह चमत्कार दिखाने कि अपनी शक्ति नहीं है । अत: नबियों के चमत्कार का जादू से कोई सम्बन्ध नहीं है । यदि ऐसा होता तो जादूगर उसका तोड़ कर लेते । परन्तु आदरणीय मूसा की घटना से सिद्ध होता है कि दुनिया भर के एकत्रित बड़े-बड़े जादूगर मूसा के चमत्कार का काट नहीं कर सके तथा जब उन्हें जादू तथा चमत्कार का अन्तर स्पष्टरूप से ज्ञात हो गया तो वह मुसलमान हो गये ।

[1]"हवारी" से तात्पर्य आदरणीय ईसा के वह अनुयायी हैं, जो उनके प्रति विश्वास किये तथा उनके सहचर एवं सहायक बने । उनकी संख्या बारह बतायी जाती है, यहाँ "वह्यी" से तात्पर्य वह प्रकाशना नहीं जो स्वर्गदूत द्वारा ईशदूतों पर उतरती थी अपितु "मन में डालने" के अर्थ में है जो अल्लाह की ओर से कुछ लोगों के मन में उत्पन्न कर दी जाती है । जैसे आदरणीय मूसा की माँ तथा आदरणीय मरियम में इसी प्रकार की मनोभावना उत्पन्न की गई । इससे विदित हुआ कि जिन लोगों ने "वह्यी" के शब्द से मूसा की माँ तथा मरियम को ईशदूत माना है वह सही नहीं । इसलिए कि इसका अर्थ मन में भावना उत्पन्न करना है । इसी प्रकार यहाँ हवारियों के ईशदूत होने का अर्थ नहीं ।

[2]मायद: ऐसे बर्तन (तबक, सीनी, प्लेट अथवा ट्रे) को कहते हैं जिसमें खाना हो । इसलिए खाने के स्थान को भी अनुवाद किया जाता है क्योंकि उस पर भी खाना रखा जाता है ।

| | |
|---|---|
| उसने (ईसा ने) कहा यदि तुम विश्वास रखते हो तो अल्लाह से डरो।[1] | اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ |
| (११३) उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि उसमें से खायें तथा हमारे दिलों को संतोष हो जाये तथा हमें विश्वास हो कि आप ने हमसे सत्य कहा और हम उस पर गवाह हो जायें। | قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾ |
| (११४) मरियम के पुत्र ईसा ने कहा, हे अल्लाह! हम पर आकाश से एक थाल उतार दे जो हममें से प्रथम एवं अन्त के लिये प्रसन्नोत्सव हो जाये[2] तथा तेरी ओर से एक चिन्ह हो तथा हमें | قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ |



सूर: का नाम भी इसी कारण से है कि इसमें इसका वर्णन है। हवारियों ने अपने हृदय के सन्तोष के लिए यह माँग की थी, जिस प्रकार से आदरणीय इब्राहीम ने मृतकों को जिलाये जाने के के प्रदर्शन की माँग की थी।

[1]अर्थात यह प्रश्न न करो क्योंकि सम्भव है यही तुम्हारी परीक्षा का कारण बन जाये क्योंकि इच्छित चमत्कार के प्रदर्शन के पश्चात उससे इंकार उस समुदाय की ईमान की कमज़ोरी को प्रदर्शित कर देगा, जो यातना का कारण बन सकता है। इसलिए ईसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें इस माँग से रोका तथा अल्लाह से डराया।

[2]इस्लामी धर्म विधान में ईद का प्रयोजन यह नहीं कि वह राष्ट्रीय उत्सव का एक दिन है जिसमें नैतिक बंधनों तथा धर्म विधानों को तोड़ते हुये अनुचित प्रसन्नता एवं हर्षोल्लास का प्रदर्शन किया जाये, दीप जलाये जायें, रंगरलियाँ मनाई जायें, जैसाकि वर्तमान युग में इसका यही अर्थ समझा जाता है तथा तदानुसार उत्सव मनाया जाता है। अपितु आकाशीय धर्मविधान में यह एक धार्मिक उत्सव होता है जिसका महत्वपूर्ण उद्देश्य यह होता हैं कि पूरा समुदाय एक साथ मिलकर अल्लाह की कृतज्ञता व्यकत करे तथा उसकी महिमा एवं प्रशंसा का वर्णन करे। यहाँ भी आदरणीय ईसा ने इस दिन को उत्सव (ईद) बनाने की जो इच्छा की इससे उनका प्रयोजन यही है कि हम तेरी महिमा, प्रशंसा एवं बड़ाई का गुणगान करें। कुछ धर्म में मनमानी विचारों को धर्म सिद्ध करने वाले ईदे मायदा को ईदे मिलाद के औचित्य का तर्क बनाते हैं। यद्यपि यह घटना हमारे धार्मिक नियम से पूर्व की है। यदि इसे इस्लाम में स्थाई रखना होता तो इसको स्पष्ट किया जाता। दूसरे यह कि पैग़म्बर के मुख से ईद बनाने की इच्छा का प्रदर्शन हुआ था तथा पैग़म्बर भी अल्लाह के आदेश से धार्मिक नियमों का वर्णन करने का अधिकारी होता है। तीसरे ईद का भावार्थ

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾

जीविका प्रदान कर तू उत्तम जीविका देने वाला है ।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّیْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّیْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾

(११५) अल्लाह (तआला) ने कहा कि मैं वह भोजन तुम लोगों के लिए उतारने वाला हूँ, फिर तुममें से जो व्यक्ति उसके बाद कुफ्र करेगा तो मैं उसको ऐसा दंड दूंगा कि वह दंड मैं सम्पूर्ण संसार में किसी को न दूंगा ।[1]

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِیْ وَاُمِّیَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِیْٓ اَنْ اَقُوْلَ

(११६) तथा वह समय भी स्मरणीय है जबकि अल्लाह (तआला) कहेगा कि हे ईसा पुत्र मरियम, क्या तुमने उन लोगों से कह दिया था कि मुझको और मेरी माता को अल्लाह के

---

तथा अर्थ भी वह होता जो उपरोक्त वर्णित पंक्तियों में वर्णित किया गया है । जबकि ईद मीलाद में इन सब बातों का कहीं भी समावेश नहीं है । इस्लाम में केवल दो ही ईदें हैं जिन्हें इस्लाम ने निर्धारित की हैं ईदुल फ़ितर तथा ईदे अज़हा, इनके अतिरिक्त कोई तीसरी ईद नहीं ।

[1]यह मायद: भोजन के थाल) आकाश से उतरा अथवा नहीं इस संदर्भ में कोई निरन्तर स्पष्ट हदीस नहीं मिलती है । अधिकतर विद्वान (इमाम शौकानी तथ इमाम इब्ने जरीर तबरी सहित) इसके उतरने के पक्ष में हैं तथा उनका तर्क क़ुरआन के शब्द ﴿اِنِّیْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ﴾ से है कि अल्लाह का वचन है जो नि:संदेह सत्य है । परन्तु इसे अल्लाह तआला की ओर से पूर्ण विश्वास के साथ वचन कहना इसलिए उचित नहीं लगता कि अगले शब्द فمن يكفر इस वचन के प्रतिबन्धित होने को प्रदर्शित करते हैं । इसलिए अन्य विद्वान कहते हैं कि जब अल्लाह तआला के वचन के साथ यह प्रतिबन्ध सुना तो उन्होंने उत्तर दिया कि तो फिर हमें इस प्रकार आवश्यकता नहीं है । जिसके पश्चात वह नहीं उतरा । इमाम इब्ने कसीर ने इन तर्क के प्रमाण को जो इमाम मुजाहिद तथा हसन बसरी से संबन्धित है सही माना है । इसके अतिरिक्त यह कहा है कि इन तर्कों की पुष्टि इस बात से भी होती है कि मायद: के उतरने की कोई प्रसिद्धि ईसाईयों में है न उनकी पुस्तकों में लिखित है । क्योंकि यदि यह उतरा हुआ होता तो उसे उनके यहाँ अवश्य प्रसिद्ध किया जाता तथा किताबों में भी तो अधिक से अधिक अथवा कम से कम कुछ तो लिखित होना चाहिए था । والله أعلم بالصواب

مَا لَيْسَ لِيْ بِحَقٍّ ۗ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ ۗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ أَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۗ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾

अतिरिक्त माबूद (पूज्य- देव) बना लेना ?[1] ईसा निवेदन करेंगे कि मैं तो तुझे सर्वगुणों से युक्त (पवित्र) समझता हूँ, मुझको किस प्रकार से शोभा देती कि मैं ऐसी बात कहता जिसके कहने का मुझे कोई अधिकार नहीं, यदि मैंने कहा होगा तो तुझको उसका ज्ञान होगा। तू तो मेरे हृदय की बात जानता है। मैं तेरे स्वयं में जो कुछ है उसको नहीं जानता।[2] मात्र तू ही परोक्षों का जानकार है।

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِيْ بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ أَنْتَ

(११७) मैंने उनसे मात्र वही कहा जिसकी तूने मुझे आज्ञा दी कि अपने पालक तथा मेरे पालक अल्लाह की आराधना करो [3] तथा जब तक मैं उनमें रहा उन पर साक्षी रहा तथा जब तूने



[1]यह प्रश्न क़ियामत के दिन होगा। उद्देश्य इससे अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य को ईष्टदेव बनाने वालों को सतर्क करना है कि जिनको तुम ईष्टदेव तथा कष्ट निवारक समझते थे वह तो स्वयं अल्लाह के सदन में उत्तरदायी हैं।

दूसरी बात यह ज्ञात हुई कि ईसाईयों ने आदरणीय मसीह के साथ आदरणीया मरियम को ईष्टदेव (पूज्य) बनाया है।

तीसरी बात यह ज्ञात हुई कि अल्लाह के अतिरिक्त ईष्टदेव वही नहीं जिन्हें मूर्तिपूजकों ने पत्थर अथवा लकड़ियों का कोई रूप बनाकर उनकी पूजा की, जिस प्रकार आजकल कब्र पूजक विद्वान अपनी जनता को यह बताकर धोखा दे रहे हैं। अपितु अल्लाह के वे भक्त भी अल्लाह के अतिरिक्त ईष्टदेव की परिधि में आते हैं जिनकी लोगों ने किसी भी रूप से इबादत की। जैसे आदरणीय ईसा तथा मरियम की ईसाईयों ने की।

[2]आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम कितने स्पष्ट शब्दों में अपने अन्तर्यामी होने का इंकार कर रहे हैं।

[3]आदरणीय ईसा ने एकेश्वरवाद तथा परमेश्वर की पूजा का आमन्त्रण दुग्धपान की आयु में दिया। जैसा *सूर: मरियम* में है तथा व्यस्क अवस्था में भी।

الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾

मुझे उठा लिया तो तू ही उनका संरक्षक था[1] तथा तू प्रत्येक विषयों पर साक्षी है।

إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۖ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾

(११८) तू यदि इनको दण्ड दे तो यह तेरे भक्त हैं तथा यदि तू इन्हें क्षमा कर दे तो तू प्रभावी विज्ञाता है।[2]

---

[1] توفيتني का अर्थ है कि जब तूने मुझे दुनिया से उठा लिया जैसाकि इसका विस्तृत वर्णन *सूरः आले इमरान* की आयत संख्या ५५ में गुज़र चुका है। इससे यह भी ज्ञात हुआ कि पैग़म्बरों (संदेष्टाओं) को मात्र उतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह की ओर से उन्हें प्रदान किया जाता है अथवा जिसका दर्शन वह अपने जीवनकाल में अपनी आँखों से करते हैं। इनके अतिरिक्त उन्हें किसी प्रकार का ज्ञान नहीं होता। जबकि अन्तर्यामी वह होता है जिसे बिना किसी के बताये हुए स्वयं प्रत्येक चीज़ का ज्ञान हो जाये तथा उसका ज्ञान आदि से अन्त तक को घेरे हो। यह ज्ञान की विशेषता अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं। इसलिए अन्तर्यामी केवल अल्लाह ही है। उसके अतिरिक्त कोई अन्तर्यामी नहीं। हदीस में आता है कि प्रलय स्थान में जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर आप के कुछ अनुयायी आने लगेंगे तो फ़रिश्ते पकड़ कर उनको दूसरी ओर ले जायेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमायेंगे कि उनको आने दो, यह हमारे अनुयायी हैं। फ़रिश्ते आप को बतलायेंगे।

« إِنَّكَ لَا تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ ».

"(ऐ मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम !) आप नहीं जानते कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात उन्होंने धर्म में क्या-क्या आधुनिकीकरण उत्पन्न किया"।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सुनेंगे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि मैं भी उस समय यही कहूँगा जो अल्लाह के भक्त (आदरणीय ईसा) ने कहा

﴿ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ ۖ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ﴾

(सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूरः अल-मायदः* व किताबुल अम्बिया, सहीह मुस्लिम बाब फनाईद्दुनिया व बयानुल हश्र यौमल क़ियामः)।

[2]अर्थ यह है कि हे अल्लाह इनका निर्णय अब तेरे ऊपर है। यह इसलिए कि तू فعال لما يريد है (जो चाहे कर सकता है) तथा तुझ से कोई पूछने वाला भी नहीं है।

﴿ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴾

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۱۹﴾

(११९) अल्लाह (तआला) कहेगा कि यह वह दिन है कि सत्यवादियों का सत्य उनके लिए लाभप्रद होगा ।[1] उनको बाग़ मिलेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिसमें वह चिरस्थाई रूप से रहेंगे । अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न तथा ये अल्लाह से प्रसन्न हैं । यह बहुत भारी सफलता है ।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۲۰﴾ ع

(१२०) अल्लाह ही का राज्य है आकाशों का तथा धरती का तथा उनका जो उनमें उपस्थित हैं तथा वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखता है ।

## सूरतुल अनआम-६

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ

सूरः अनआम मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें एक सौ पैंसठ आयतें एवं बीस रुकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अति कृपालु तथा अति दयालु है ।



---

"अल्लाह जो भी करता है उसकी पकड़ न होगी, लोग की उनके कर्मों पर पकड़ होगी ।" (*सूरः अल-अम्बिया-२३*)

अर्थात आयत में अल्लाह के समक्ष भक्तों की शक्तिहीनता तथा असहाय होने का प्रदर्शन है, तथा अल्लाह की महिमा, विशेषता तथा गुणों का वर्णन है । तथा इन दोनों के माध्यम से क्षमा की प्रार्थना भी की जा रही है । अल्लाह ही महिमा योग्य है । कैसी विचित्र तथा प्रभावी आयत है । इसीलिए हदीस में आता है कि एक रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर स्वीच्छा नमाज़ में इस आयत को पढ़ते समय ऐसी अवस्था हुई कि बार-बार प्रत्येक रक्अत में यही आयत पढ़ते रहे यहाँ तक कि प्रातः हो गयी । (मुसनद अहमद भाग-५, पृ॰१४९)

[1]आदरणीय इब्ने अब्बास ने इसके अर्थ यह बताये हैं । ينفع الموحدين توحيدهم "वह दिन ऐसा होगा कि केवल एकेश्वरवाद तथा एकेश्वरवादी को लाभ पहुँचेगा । अर्थात मूर्तिपूजकों की क्षमा तथा मोक्ष का प्रश्न ही नहीं होता ।"

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَجَعَلَ ٱلظُّلُمَٰتِ وَٱلنُّورَ ۖ ثُمَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ①

(१) सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिस ने आकाशों एवं पृथ्वी की रचना की एवं अंधेरों तथा प्रकाश को बनाया[1] फिर भी जो विश्वास नहीं रखते (अन्य को) अपने प्रभु के समान मानते हैं।[2]

هُوَ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰٓ أَجَلًا ۖ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُۥ ۖ ثُمَّ أَنتُمْ تَمْتَرُونَ ②

(२) उसी ने तुम्हें मिट्टी से बनाया।[3] फिर एक समय निर्धारित किया।[4] तथा एक निर्धारित समय उसके पास है।[5] फिर भी तुम संदेह करते हो।[6]

---

[1]ज़ुल्मात से रात का अंधकार तथा नूर से दिन का प्रकाश अथवा कुफ्र (अविश्वास) का अंधकार तथा ईमान का प्रकाश तात्पर्य है। प्रकाश (नूर) के सापेक्ष अंधकार (ज़ुल्मात) को अरबी शब्द में बहुवचन प्रयोग किया गया है, इसलिए कि ज़ुल्मात के कई कारण हैं तथा वे कई प्रकार की होती हैं। तथा नूर (प्रकाश) का वर्णन एक सामान्य रूप में है, जो अपने सभी भागों के साथ सम्मिलित है। (फ़तहुल क़दीर) यह भी हो सकता है कि चूँकि मार्गदर्शन तथा ईमान का मार्ग एक ही है, चार पाँच अथवा कई नहीं हैं, इसलिए प्रकाश को एक वचन प्रयोग किया गया है।

[2]अर्थात उसके साथ दूसरों को सम्मिलित करते हैं।

[3]अर्थात तुम्हारे पिता आदम, जो तुम्हारी मूल वास्तविकता हैं, तथा जिनसे तुम सभी निकले हो। इसका एक अन्य अर्थ यह भी हो सकता है कि तुम जो भोजन व खाद्य पदार्थ खाते हो, सभी धरती से उगते हैं तथा उन्हीं खाद्य पदार्थो से वीर्य बनता है, जो माता के गर्भ में जाकर मनुष्य का रूप धारता है। इस प्रकार से तुन्हारा जन्म मिट्टी से है।

[4]अर्थात मृत्यु का समय।

[5]अर्थात अन्त दिवस के समय को मात्र अल्लाह जानता है। अर्थात पहला "अजल" शब्द प्रयोग किया गया है उसका अर्थ जन्म से मृत्यु तक का समय (आयु) है। दूसरे "अजलुममुस्सम्मा:" शब्द का अर्थ मृत्यु के बाद से क़ियामत (प्रलय) तक संसार की आयु है, जिसके पश्चात् वह पतन तथा विनाश से मिलकर समाप्त हो जायेगा तथा एक अन्य दुनिया अर्थात आख़िरत के जीवन का प्रारम्भ होगा।

[6]अर्थात क़ियामत (प्रलय) के आने के विषय में जिस प्रकार से काफ़िर (अधर्मी) तथा मूर्तिपूजक कहा करते थे कि जब हम मरकर मिट्टी में मिल जायेंगे तो उसके पश्चात

(३) तथा वही अल्लाह है आकाशों में एवं पृथ्वी में, वह तुम्हारे भेद एवं व्यक्त को जानता है तथा तुम्हारी कृतियों से अवगत है।[1]

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ۭ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝

(४) तथा उनके पास कोई निशानी उनके प्रभु की निशानियों में से नहीं आती अपितु वह उससे मुहँ फेरते हैं।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝

(५) उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बताया जबकि वह उनके पास पहुँची, तो शीघ्र ही उन्हें सूचना मिल जायेगी उस चीज़ की जिसका यह लोग उपहास करते थे।[2]

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۭ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰۗؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

(६) क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम उनसे पूर्व कितने गुटों को नष्ट कर चुके हैं जिनको हमने दुनिया में इतनी शक्ति प्रदान की थी

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَاۗءَ

---

पुन: हमें किस प्रकार जीवित किया जायेगा ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया जिसने तुम्हें पहली बार जन्म दिया, वही तुम्हें पुन: जीवित करेगा। (सूर: *यासीन*)

[1]अहले सुन्नत अर्थात विगत धर्मात्माओं का विश्वास है कि अल्लाह तआला स्वयं तो अर्श पर है जैसा कि वह महिमा योग्य है, परन्तु अपने ज्ञान के आधार पर प्रत्येक स्थान पर है अर्थात उसके ज्ञान तथा सूचना की परिधि से कोई भी चीज़ बाहर नहीं। परन्तु कुछ गुटों के लोग यह कहते हैं कि अल्लाह तआला अर्श पर नहीं अपितु हर स्थान पर है तथा वह इस आयत से अपने विश्वास की पुष्टि करते हैं। परन्तु यह विश्वास ठीक नहीं है, यह तर्क भी ठीक नहीं है। आयत का अर्थ यह है कि वह शक्ति जिसको आकाशों तथा धरती पर अल्लाह कहकर पुकारते हैं तथा आकाशों तथा धरती पर जिसका राज्य है तथा आकाशों एवं धरती पर जिसको ईष्टदेव समझा जाता है। वह अल्लाह तुम्हारे छिपे तथा स्पष्ट तथा जो कुछ कर्म तुम लोग करते हो, सबको जानता है। (फ़तहुल क़दीर) इसके अन्य तर्क भी प्रस्तुत किये गये हैं जिन्हें ज्ञानी लोगों की व्याख्या में देखा जा सकता है जैसे तफ़सीर तबरी तथा इब्ने कसीर आदि।

[2]अर्थात इस मुहँ मोड़ने तथा झुठलाने का पाप उन्हें मिलेगा, उस समय उन्हें आभास होगा कि काश हम उस सच्ची किताब को न झुठलाते तथा उपहास न करते।

عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٦﴾

जैसी तुम्हें भी नहीं प्रदान किया तथा हमने उन पर मूसलाधार वर्षा की तथा हमने उनके नीचे से नदियाँ बहायीं, फिर हमने उनको उनके पाप के कारण नष्ट कर दिया।[1] तथा उनके पश्चात अन्य समुदाय पैदा किये।[2]

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾

(७) तथा यदि हम कागज़ पर लिखा हुआ कोई पत्र भी आप पर उतारते फिर यह लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी यह काफ़िर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं मगर स्पष्ट जादू है।[3]

---

[1]अर्थात जब पाप के कारण तुमसे पूर्व के समुदायों को हम नष्ट कर चुके हैं, जबकि वे शक्ति में तुमसे कहीं अधिक थे तथा साधन तथा धन के बाहुल्य में भी तुम से अधिक थे तो तुम्हें नष्ट करना हमारे लिये क्या कठिन है ? इससे ज्ञात हुआ कि किसी समाज की भौतिक उन्नति तथा ख़ुशहाली से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वह सफल तथा विजयी है। यह अवसर तथा समय देने की वह अवस्थायें हैं जो परीक्षा लेने के लिए विभिन्न समुदायों को दी जाती हैं। परन्तु जब उनका समय पूरा हो जाता है, तो यह सारी उन्नति तथा ख़ुशहाली उन्हें अल्लाह के प्रकोप से बचाने में सफल नहीं होतीं।

[2]ताकि उनकी भी पिछली समुदायों की तरह परीक्षा लें।

[3]यह उनकी हठधर्मी, कपट, द्वेष, तथा ईर्ष्या का प्रदर्शन है कि यह स्पष्ट कागज़ अल्लाह का लिखा हुआ पत्र यदि वह उसे छू भी लेंगे तो भी मानने के लिए तैयार नहीं होंगे तथा वह इसे जादूगर का खेल बतायेंगे।

﴿وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ﴾

"यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल दें और यह उसमें चढ़ने भी लग जायें, तब भी कहेंगे कि हमारी आँखें मतवाली हो गयी हैं, अपितु हम पर जादू कर दिया गया है।" (सूर: *अल-हिजर*-१४ तथा १५)

﴿وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ﴾

(८) तथा उन्होंने कहा कि आप पर कोई फ़रिश्ता (सुर) क्यों नहीं उतारा गया और यदि हम फ़रिश्ता उतार देते तो विषय का निर्णय कर दिया जाता फिर उन्हें अवसर नहीं दिया जाता ।[1]

وَقَالُوا لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ⑧

---

"तथा यदि वह आकाश से गिरता हुआ टुकड़ा भी देख लें तो कहेंगे कि तह पर तह बादल हैं।" (*सूर: अल-तूर-४४*)

अर्थात अल्लाह के प्रकोप की कोई न कोई कल्पना बना लेंगे कि जिसमें अल्लाह का अधिकार उन्हें स्वीकार न करना पड़े वास्तव में पूरे ब्रहमाण्ड में जो कुछ भी होता है, उसमें अल्लाह की इच्छा का समावेश होता है।

[1]अल्लाह ने मानव जाति को मार्गदर्शन कराने के लिए, जितने भी अम्बिया और रसूल (संदेशवाहक) भेजे सभी मानव पुरुष ही थे तथा प्रत्येक समुदाय में उन्हीं में से एक को प्रकाशना तथा देववाणी से विभूषित किया। यह इसलिये कि उसके बिना संदेष्टा मार्ग दर्शाने का काम पूरा नहीं कर सकता था, उदाहरणार्थ यदि फ़रिश्ते (स्वर्गदूत) को रसूल (संदेष्टा) बनाकर भेजता तो मानवी भाषा में वार्तालाप करने में असमर्थ होते। दूसरे वह मानवीय भावनाओं से शून्य होने के कारण विभिन्न मानवीय परिस्थितियों एवं भावना के प्रबोध में असमर्थ होते। ऐसी दशा में मार्गदर्शन का कर्तव्य किस प्रकार पूरा कर सकते थे? इसीलिए अल्लाह का मानव जाति पर एक बड़ा उपकार है कि उसने मानव ही को ईशदूत तथा संदेशवाहक बनाया। जैसाकि परमेश्वर (अल्लाह) पवित्र क़ुरआन में इसकी चर्चा एक उपकार के रूप में कर रहा है।

﴿لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ﴾

"अल्लाह तआला ने ईमानवालों पर उपकार किया कि उन्हीं की जाति में से एक व्यक्ति को रसूल बनाकर भेजा।" (*सूर: आले इमरान-१६४*)

लेकिन पैग़म्बरों का मनुष्य होना काफ़िरों के लिए आश्चर्यजनक है। वह समझते रहे कि रसूल मनुष्यों में से नहीं फ़रिश्तों में से होना चाहिए था। अर्थात उनके निकट मनुष्य के योग्य रिसालत की पदवी नहीं थी जैसाकि आधुनिक बिदअती लोग समझते हैं। تشابهت قلوبهم काफ़िर तथा मूर्तिपूजक रसूलों के मनुष्य होने का इंकार नहीं करते थे क्योंकि वह उनके पूरे परिवार से परिचित थे परन्तु रिसालत का इंकार कर देते रहे। जबकि आजकल के बिदअती लोग रिसालत का इंकार नही करते हैं परन्तु रिसालत के योग्य मनुष्यत्व को न समझने के कारण रसूलों के मनुष्य होने का इंकार करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि हम मनुष्य के स्थान पर फ़रिश्ता भी रसूल बनाकर भेज देते अथवा इस रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुष्टि के लिए हम कोई फ़रिश्ता भी भेज देते (जैसाकि

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝٩

(९) तथा यदि हम रसूल को फ़रिश्ता बनाते तो उसे पुरुष बनाते तथा उन पर वही संदेह उत्पन्न करते जो सन्देह कर रहे हैं।[1]

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُم مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠

(१०)आप से पूर्व बहुत से रसूलों (ईशदूतों) का उपहास किया गया तो जो उपहास कर रहे थे उनके उपहास का दुष्परिणाम उन पर पलट पड़ा।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١

(११) (आप) कह दीजिए कि तनिक धरती पर घूम फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम हुआ ?

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلْ لِّلّٰهِ ۭ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۭ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

(१२) (आप) कह दीजिए कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है इन सब पर किसका स्वामित्व है ? (आप) कह दीजिए सब पर अल्लाह का स्वामित्व है, अल्लाह ने कृपा करना अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है।[2] तुमको



---

यहाँ इसी बात का वर्णन किया गया है) तथा फिर वह ईमान नहीं लाते तो बिना समय दिये ही उनका नाश कर दिया जाता।

[1]अर्थात यदि हम फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजने का निर्णय करते तो स्पष्ट बात है कि वह फ़रिश्ते के रूप में आ नहीं सकता था, क्योंकि इस प्रकार से मनुष्य उससे भयभीत हो जाते तथा निकटता तथा घनिष्टता पैदा करने के बजाय दूर भागते। इसलिए आवश्यक था कि उसे मनुष्य के रूप में भेजा जाता। परन्तु तुम्हारे यह नेता फिर यही संदेह करते कि मनुष्य ही है, जो इस समय भी रसूल को मनुष्य के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं, तो फ़रिश्ते के भेजने का क्या लाभ ?

[2]जिस प्रकार हदीस में नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जब अल्लाह तआला ने सृष्टि को पैदा किया तो अर्श पर यह लिख दिया। «إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي» सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद व बदउल ख़लक, मुस्लिम किताबुल तौबा) नि:संदेह मेरी दया मेरे क्रोध पर प्रभावी है। परन्तु यह दया प्रलय के दिन केवल ईमानवालों के लिए होगी, काफ़िरों पर प्रभु अत्यधिक क्रोधित होगा। इसका अर्थ यह है कि दुनिया में उसकी कृपा तथा दया सामान्यरूप से सभी के लिए है चाहे वे ईमानवाला तथा काफ़िर, सत्कर्मी तथा कुकर्मी,

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

अल्लाह (तआला) क़ियामत के दिन एकत्रित करेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं, जिन लोगों ने स्वयं को नष्ट कर लिया है, वही ईमान नहीं लायेंगे।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَ النَّهَارِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٣﴾

(१३) तथा जो कुछ दिन रात में निवास करते हैं वह सभी कुछ अल्लाह के ही हैं तथा वह बहुत सुनने वाला एवं बड़ा जानने वाला है।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ إِنِّيٓ أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٤﴾

(१४)आप कहिये कि क्या मैं उस अल्लाह से अन्य को मित्र (स्वामी, ईष्टदेव) बना लूँ[1] जो आकाशों एवं पृथ्वी का रचयिता है तथा वह खिलाता है खिलाया नहीं जाता, आप कहिये कि मुझे आदेश किया गया है कि मैं उनमें सर्वप्रथम रहूँ जिसने (अल्लाह के प्रति) आत्म-समर्पण किया तथा मिश्रणवादियों में कदापि न रहूँ।



---

आज्ञाकारी तथा अवज्ञाकारी हों सभी उससे लाभान्वित हो रहे हैं। अल्लाह तआला किसी भी व्यक्ति के जीवन यापन की सामग्री को प्राप्त करने के साधन को उसकी अवहेलना एवं अवज्ञाकारिता के कारण बन्द नहीं करता, परन्तु उसकी दया का समानरूप केवल दुनिया तक ही सीमित है। आख़िरत (परलोक) में जो कि प्रतिफल का स्थान है, वहाँ अल्लाह के न्याय की विशेषता का पूर्ण प्रदर्शन होगा, जिसके परिणाम स्वरूप ईमान वाले उसकी कृपा तथा दया की छत्रछाया में स्थान पायेंगे तथा काफ़िर तथा उपद्रवी नरक की स्थाई यातना के भोगी होंगे। इसीलिए कुरआन में फ़रमाया गया।

﴿ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَوٰةَ وَالَّذِينَ هُم بِـَٔايَٰتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴾

"तथा हमारी कृपा प्रत्येक वस्तु पर विस्तृत है और हम शीघ्र उसे उनके लिये लिख देंगे जो अल्लाह से डरते हैं तथा ज़कात (धर्मदान) देते हैं तथा जो हमारी निशानियों (लक्षणों) के प्रति विश्वास रखते हैं।" (सूरः *अल-आराफ़*-१५६)

[1]वली से तात्पर्य यहाँ ईष्टदेव एवं स्वामी है, जैसाकि अनुवाद से स्पष्ट है अपितु मित्र कहना तो उचित है।

قُلْ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

(१५) (आप) कह दीजिए कि मैं यदि अपने प्रभु का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डराता हूँ ।[1]

مَّن يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُۥ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

(१६) जिससे उस दिन यातना समाप्त कर दी जायेगी, उस पर अल्लाह ने अति कृपा की तथा यह स्पष्ट सफलता है ।[2]

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

(१७) तथा यदि अल्लाह (तआला) तुझको कोई कष्ट दे तो उसको दूर करने वाला अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं है तथा यदि तुझको अल्लाह तआला लाभ प्रदान करे तो वह प्रत्येक चीज़ पर प्रभुत्व रखने वाला है ।[3]



---

[1]अर्थात यदि मैंने भी अपने पालनहार की अवज्ञा करते हुए उस के सिवाय अन्य को ईष्टदेव वना लिया तो अल्लाह की यातना (प्रकोप) से नहीं बच सकूँगा ।

[2] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर कहा गया है ।

﴿ فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ﴾

"जो अग्नि (नरक) से दूर करके स्वर्ग में प्रवेश पा गया, वह सफल हो गया ।" *(सूर: आले- इमरान-१८५)*

इसलिए कि सफलता हानि से बच जाने तथा लाभ प्राप्त करने का नाम है । तथा स्वर्ग से वढ़कर लाभ क्या होगा ?

[3]अर्थात लाभ हानि का अधिकारी तथा समस्त विश्व की प्रत्येक वस्तु का स्वामी अल्लाह ही है । तथा बिना उसके आदेश एवं निर्णय के कोई खण्डन करने वाला नहीं है । एक हदीस में इस विषय को इस प्रकार वर्णन किया गया है ।

« اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ ».

"हे अल्लाह जो तू प्रदान करे उसे कोई रोक नहीं सकता, तथा जो तू रोक ले, उसे कोई दे नहीं सकता, तथा किसी की प्रतिष्ठा तेरी तुलना में उसे लाभ नहीं पहुँचा सकती ।" (सहीह बुखारी किताबुल एअतेसाम वल कद्र वद्दावात, मुस्लिम कितावुल सलात वल मसाजिद)

(१८) वही अपने भक्तों पर प्रभावशाली है तथा वही विज्ञाता सूचित है ।[1]

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ⑱

(१९) आप कहिये कि किस की गवाही महान है, कहिये कि हमारे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह (साक्षी) है ।[2] तथा यह क़ुरआन मेरी ओर प्रकाशना किया गया है तकि उसके द्वारा तुम्हें तथा जिस तक पहुँचे उन सभों को सचेत करूँ,[3] क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ अन्य पूज्य हैं ? आप कह दें कि मैं इस की गवाही नहीं देता, आप कहिये कि वह एक ही अराध्य है तथा मैं तुम्हारे मिश्रण से निर्दोष हूँ ।

قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِیْدٌۢ بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ ۫ وَاُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ⑲

(२०) जिन्हें हमने किताब (तौरात तथा इंजील) दी है वह आप (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उसी प्रकार पहचानते हैं जैसे

اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ⑳

---

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रत्येक नमाज़ के पश्चात इस प्रार्थना का जप करते थे ।

[1]अर्थात सभी माथे उसके आगे झुके हुए हैं, बड़े-बड़े शक्तिशाली व्यक्ति उसके समक्ष असहाय हैं, वह प्रत्येक चीज़ पर प्रभावशाली है तथा सम्पूर्ण सृष्टि उसकी आज्ञाकारी है, वह अपने प्रत्येक कार्य में सक्षम है तथा प्रत्येक वस्तु की उसे सूचना है, उसे यह भी ज्ञात है कि उसके कृपा के योग्य कौन है तथा कौन नहीं है ।

[2]अर्थात अल्लाह तआला ही अपने एक तथा पालनहार होने का स्वयं ही साक्षी है । उससे बढ़ कर कोई भी गवाह नहीं ।

[3]रबिअ बिन अनस कहते हैं कि अब जिसके पास भी यह क़ुरआन पहुँच जाये, यदि वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा अनुयायी है, तो उसका यह कर्तव्य है कि वह भी लोगों को अल्लाह की ओर उसी प्रकार आमन्त्रित करे जिस प्रकार रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को आमन्त्रित किया था तथा उसी प्रकार सतर्क करे जिस प्रकार से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सतर्क किया था । (इब्ने कसीर)

अपने पुत्रों को, जो अपना आपा खो दिये हैं वही विश्वास नहीं करेंगे ।[1]

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝٢١

(२१) तथा उस से बढ़कर अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये एवं उसकी निशानियों (चिन्हों) को मिथ्या माने[2] वस्तुत: अत्याचारी सफल नहीं होते ।[3]

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝٢٢

(२२) तथा जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे, फिर जिन्होंने मिश्रण किया उन से कहेंगे वे कहाँ हैं जिनको तुम (अल्लाह का) साझी समझ रहे थे वह दिन स्मरणीय है ।

---

[1] يعرفونه में सर्वनाम (उसको) है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर फिरता है, अर्थात अहले किताब (यहूदी एवं ईसाई) आपको अपने पुत्रों की भाँति पहचानते हैं, क्योंकि आप की विशेषताओं का वर्णन उनके धर्मशास्त्रों में विद्यमान है तथा इसके कारण अन्तिम ईशदूत की प्रतीक्षा कर रहे थे अब उनमें से जो आपके प्रति विश्वास न करें वह भारी क्षति में हैं, क्योंकि यह जानते हुये इंकार कर रहे हैं ।

[2]अर्थात जिस प्रकार से अल्लाह पर मिथ्याभियोगी सबसे बड़ा अत्याचारी है इसी प्रकार वह भी है जो अल्लाह की आयतों तथा सत्य ईशदूत को न मानता हो । मिथ्या दूतत्व के दावे पर इतनी कड़ी चेतावनी के उपरान्त भी अनेकों ने अनेक युग में नबी होने का मिथ्या दावा किया तथा ऐसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस भविष्यवाणी की पूर्ति हो गयी कि ३० बड़े मिथ्यावादी होंगे, प्रत्येक ईशदूत होने का दावा करेंगें, विगत शताब्दी में भी "कादियान" के एक वंचक ने नबी होने का दावा किया तथा आज उसके अनुयायी उसे इसलिए सत्यदूत तथा प्रतिज्ञात मसीह मानते हैं की उसे एक अति अल्प संख्या नबी मानती है जबकि किसी धूर्त को नबी मान लेना उसकी सच्चाई का प्रमाण नहीं बन सकता । सत्य तो क़ुरआन तथा हदीस से तर्क संगत होना चाहिए ।

[3]जब दोनों ही अत्याचारी हैं, तो न मिथ्यावादी ही सफल होगा और न निवर्ती । इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने परिणाम पर भली-भाँति विचार कर ले ।

(२३) फिर उनके मिश्रण का सिवाये इसके कोई बहाना न होगा कि कहें कि अल्लाह की शपथ हम मिश्रणवादी नहीं थे ।[1]

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّآ أَن قَالُوا۟ وَٱللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

(२४) देखो कि वह कैसे अपने ऊपर झूठ बोल गये तथा उनका आरोप उनसे खो गया ।[2]

ٱنظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ ۚ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾

(२५) उनमें से कुछ आप की ओर कान धरते हैं ।[3] तथा हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ

---

[1]फ़ित्न: का एक अर्थ मिश्रण तथा एक अर्थ क्षमा-याचना के किये गये हैं । अर्थात अन्त में यह तर्क तथा क्षमा-याचना को प्रस्तुत करके छुटकारा पाने का प्रयत्न करेंगे कि हम तो मूर्तिपूजक नहीं थे । तथा इमाम इब्ने जरीर ने इसका अर्थ वर्णित किया है ।

ثم لم يكن قيلهم عند فتنتنا إياهم اعتذارا مما سلف منهم من الشرك بالله

"जब हम उन्हें प्रश्नों की भट्टी में झोंक देंगे, तो दुनिया में उन्होंने जो मूर्तिपूजन किया, उसकी क्षमा के लिए यह कहे बिना उनके लिए कोई अन्य मार्ग न रह जायेगा कि हम तो मूर्तिपूजक ही न थे ।"

यहाँ यह शंका न हो कि वहाँ तो मनुष्य के हाथ-पैर गवाही देंगे तथा मुख पर मोहर लगा दी जायेगी, फिर यह इंकार किस प्रकार करेंगे ? इसका उत्तर आदरणीय इब्ने अब्बास ने दिया है कि जब मूर्तिपूजक देखेंगे कि मुसलमान स्वर्ग में जा रहे हैं, तो वह आपस में विचार-विमर्श करके मूर्तिपूजन से ही इंकार कर देंगे । तब अल्लाह तआला उनके मुख पर मोहर लगा देगा । तथा उनके हाथ-पैर उन्होंने जो किया होगा उसकी गवाही देंगे, फिर वह अल्लाह तआला से कोई बात छुपाने की शक्ति न रख सकेंगे । (इब्ने कसीर)

[2]परन्तु वहाँ उन्हें इस स्पष्ट असत्य का कोई लाभ न होगा जिस प्रकार दुनिया में मनुष्य कभी-कभार ऐसा आभास करता है । इसी प्रकार उनके झूठे इष्टदेव भी, जिनकी वे अल्लाह के अतिरिक्त पूजा एवं उपासना करते थे तथा अपना कष्टनिवारक, सहायक, कृपा निधान तथा पक्षक समझते थे लुप्त हो जायेंगे तथा वहाँ उनपर अल्लाह के साथ अन्य को सम्मिलित करना स्पष्ट हो जायेगा, परन्तु वहाँ उनकी पूर्ति का कोई साधन न होगा ।

[3]अर्थात यह मूर्तिपूजक आप के पास क़ुरआन तो आकर सुनते हैं, परन्तु चूँकि उद्देश्य मार्गदर्शन प्राप्त करना नहीं है, इसलिए इससे कोई लाभ नहीं प्राप्त करते ।

وَفِيٓ ءَاذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِن يَرَوْا۟ كُلَّ ءَايَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا۟ بِهَا ۚ حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءُوكَ يُجَٰدِلُونَكَ يَقُولُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِنْ هَٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾

रखे हैं कि उसे समझें तथा उनके कान बहरे हैं ।[1] और यदि वह सभी लक्षणों को देख लें तब भी उन पर विश्वास नहीं करेंगे यहाँ तक कि जब आप के पास आते हैं झगड़ा करते हैं, काफ़िर (विश्वासहीन) कहते हैं कि यह मात्र पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं ।[2]

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۖ وَإِن يُهْلِكُونَ إِلَّآ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) और यह लोग इससे दूसरों को भी रोकते हैं तथा स्वयं भी दूर-दूर रहते हैं ।[3] तथा ये लोग अपने आप को नष्ट कर रहे हैं एवं कुछ नहीं जानते ।[4]

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا۟ عَلَى ٱلنَّارِ فَقَالُوا۟ يَٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِـَٔايَٰتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा यदि आप उस समय देखें जब ये लोग नरक के निकट खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे ।[5] हाय ! क्या ही अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिये जायें (तथा यदि ऐसा हो



---

[1]इसके अतिरिक्त उनके अविश्वास प्रतिकार स्वरूप हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं तथा उनको कान से बधिर कर दिया है जिसके कारण उनके दिलों को सत्य समझने तथा कान सत्य सुनने योग्य नहीं रहे ।

[2]अब वह इतने भटक चुके हैं कि इस अज्ञान के अंधकार में यदि वे चमत्कार का प्रकाश भी देख लें तो भी यह संशय तथा संदेह में पड़े रहेंगे और ईमान नहीं लायेंगे, ये ईमान से वंचित ही रहेंगे तथा उनकी ईर्ष्या तथा द्वेष इतना बढ़ गया है कि क़ुरआन करीम को पूर्वजों की अप्रमाणित कहानियाँ कहते हैं ।

[3]अर्थात जन-सामान्य को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तथा क़ुरआन करीम से रोकते हैं ताकि वे ईमान न लायें तथा स्वयं भी दूर-दूर रहते हैं ।

[4]परन्तु लोगों को रोकना तथा स्वयं भी दूर रहना हमारा अथवा हमारे पैग़म्बर का क्या बिगाड़ लेगा ? इस प्रकार का कार्य करके अज्ञानता में अपने नाश का साधन स्वयं तैयार कर रहे हैं ।

[5]यहाँ पर यदि का उत्तर लुप्त है जो इस प्रकार होगा, "तो आप को भयानक दृश्य दिखायी देगा ।"

जाये) तो हम अपने प्रभु की निशानियों को न झुठलायें तथा हम ईमानवालों में से हो जायें ।[1]

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوا يُخْفُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾

(२८) अपितु जिस वस्तु को इसके पूर्व छुपाया करते थे, वह उनके समक्ष आ गयी है ।[2] तथा यदि यह लोग पुन: वापस भेज दिये जायें तब भी यह वही करेंगे जिससे इनको रोका गया था तथा नि:सन्देह वे लोग झूठे हैं ।[3]

---

[1]परन्तु वहाँ से पुन: दुनिया में आना सम्भव नहीं है कि वे अपनी इस इच्छा की पूर्ति कर सकें। काफ़िरों की इन इच्छाओं का वर्णन क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर हुआ है जैसे :

﴿ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۞ قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ ﴾

"हे हमारे प्रभु ! हमें इस नरक से निकाल ले यदि हम पुन: अवज्ञाकारी हों तो अवश्य अत्याचारी हैं। अल्लाह तआला फ़रमायेगा इसी में दुष्टों पड़े रहो, मुझसे बात न करो।" (*सूर: अल-मोमिनून*- १०७-१०८)

﴿ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴾

"हे हमारे प्रभु ! हमने देख लिया तथा सुन लिया, अब हमें पुन: दुनिया में भेज दे ताकि हम पुण्य का कार्य करें, अब हमें विश्वास हो गया ।" (*सूर: अलिफ़ लाम मीम अल-सजद:*-१२)

[2]بَلْ शब्द अरबी भाषा में पहली बात को त्यागने के लिए आता है। इसके कई भावार्थ किये गये हैं १. उनके लिए वह अविश्वास, प्रतिरोध तथा झूठ व्यक्त हो जायेगा जो उससे पूर्व वे संसार अथवा परलोक में छुपाते थे। अर्थात जिसका इंकार करते थे, जैसे वहाँ भी प्रारम्भ में कहेंगे कि हम तो मूर्तिपूजक ही नहीं थे। २. अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा पवित्र क़ुरआन का ज्ञान जो उनके दिलों में था परन्तु अपने अनुयायियों से छिपाते थे, वहाँ प्रकाशित होंगे। ३. अथवा जो अवसरवादी थे वहाँ उनका अवसरवाद प्रकाश में आ जायेगा जिसे वे दुनिया में ईमानवालों से छिपाते थे। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[3]अर्थात पुन: संसार में आने की इच्छा, ईमान लाने के लिए नहीं केवल यातना से बचने के लिए है, जो उनको क़ियामत (प्रलय) के दिन सामने आयेगा तथा जिसका वे निरीक्षण कर लेंगे । यदि यह संसार में पुन: भेज भी दिये जायें तब भी यह वही कुछ करेंगे जो पूर्व में करते रहे थे ।

وَقَالُوٓا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा यह कहते हैं कि केवल यही सांसारिक जीवन हमारा जीवन है तथा हम पुन: जीवित नहीं किये जायेंगे ।[1]

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा यदि आप उस समय देखें जब ये अपने प्रभु के समक्ष खड़े किये जायेंगे । अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि क्या यह सत्य नहीं है ? वे कहेंगे नि:सन्देह प्रभु की सौगन्ध सत्य है । अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा तो अपने कुफ्र (अविश्वास) की यातना सहन करो ।[2]

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٣١﴾

(३१) नि:सन्देह हानि में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया । यहाँ तक कि जब वह निर्धारित समय उन पर सहसा आ पड़ेगा, कहेंगे कि हाय अफ़सोस हमारे आलस्य पर जो इसके विषय में हुई । तथा उनकी अवस्था यह होगी कि अपना बोझ अपनी कमर पर लादे हुए होंगे । सावधान वह बुरा बोझ लादेंगे ।[3]



---

[1]ये मरणोपरान्त पुनर्जीवन से इंकार धर्महीन लोग ही करते हैं तथा इस वास्तविकता से इंकार ही अधर्म तथा अवज्ञा का कारण है । वरन यदि वास्तव में मनुष्य के दिल में परलोक के प्रति सत्य विश्वास हो जाये, तो अधर्म तथा अवज्ञा के मार्ग से तुरन्त क्षमा-याचना कर लेगा ।

[2]अर्थात आँखों से दर्शन कर लेने के पश्चात तो वे स्वीकार कर लेंगे कि आख़िरत का जीवन वास्तव में सत्य है । परन्तु वहाँ इस स्वीकार का लाभ न होगा तथा अल्लाह तआला उनसे फ़रमायेगा कि अब तो अपने अविश्वास के प्रतिकार में यातना का स्वाद चखो ।

[3]अर्थात जो अल्लाह से मिलने का इंकार करते हैं वह जिस क्षति एवं असफलता में होंगे तथा अपने आलस्य पर जिस प्रकार लज्जित होंगे तथा पापों का भार लादे होंगे आयत में उसी का चित्रण किया गया है । فرطنا فيها में सर्वनाम الساعة (प्रलय) की ओर फिर रहा है, अर्थात प्रलय की तैयारी तथा उसकी स्वीकृति के विषय में जो त्रुटि हमसे हुई अथवा الصفقة (सौदा) की ओर फिर रहा है, यह शब्द यद्यपि वाक्य में नहीं किन्तु पूर्व के वर्णन से

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा सांसारिक जीवन तो कुछ भी नहीं सिवाये खेल-तमाशा के तथा अंतिम घर (परलोक) अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा है। क्या तुम सोच-विचार नहीं करते हो ?

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾

(३३) हम भली-भाँति जानते हैं कि उनके कथन आप को दुखी करते हैं, तो यह लोग आप को झूठा नहीं कहते, परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह तआला की आयतों का इंकार करते हैं।[1]

---

यह भावार्थ सांकेतिक होता है अथवा इस सौदे (क्रय-विक्रय) से तात्पर्य विश्वास के बदले अविश्वास करना है, अर्थात व्यापार करके हमने बड़ी तुच्छता की अथवा सर्वनाम حياة (जीवन) की ओर फिर रहा है, अर्थात हमने अपने जीवन में पाप तथा अधर्म एवं मिश्रण करके जो आलस्य किये (फ़तहुल क़दीर)

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों के झुठलाने पर जो कष्ट एवं दुख पहुँचता था, उसके निराकरण तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सान्त्वना के लिए फ़रमाया जा रहा है कि यह आप को नहीं झुठला रहे हैं (आप को तो सत्यवादी तथा ईमानदार मानते हैं) अपितु यह अल्लाह की आयतों को झुठलाया जा रहा है। तथा यह एक अत्याचार है जो वह कर रहे हैं। त्रिमज़ी आदि में एक कथन है कि अबू जहल ने एक बार रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि ऐ मोहम्मद ! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हम तुमको नहीं अपितु जो कुछ लेकर आये हो उसको झुठलाते हैं। इस पर यह आयत उतरी। त्रिमज़ी का यह कथन प्रमाण के अनुसार क्षीण है परन्तु अन्य सहीह कथन से इस घटना की पुष्टि होती है कि मक्का के काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यवादिता, ईमानदारी तथा स्पष्ट न्यायवादी होने को मानते थे, परन्तु इसके बावजूद वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाने से भागते थे। आज भी जो लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुचरित्रता, न्यायकारी, ईमानदारी तथा सत्यवादिता का ख़ूब झूम-झूम कर वर्णन करते हैं तथा इस विषय पर धारा प्रवाह भाषण देते हैं। परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुकरण करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन की तुलना में चिन्तन तथा विचार तथा अपने नेताओं के कथनों को महत्व देते हैं। उन्हें विचार करना चाहिए कि यह किसका आचरण है जिसे उन्होंने अपनाया है ?

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा आप से पूर्व रसूलों को झूठा कहा जा चुका है और उन्होंने उस पर धैर्य धारण किया तथा वे कष्ट दिये गये यहाँ तक कि उनके पास हमारी सहायता आ गई,[1] अल्लाह की बातें कोई बदलने वाला नहीं ।[2] तथा आप के पास पैग़म्बरों (उपदेशकों) की घटनायें आ चुकी हैं ।[3]

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِى

(३५) और यदि उनका मुहँ फेरना आप पर भारी हो रहा है तो यदि आप से हो सके तो धरती

---

[1]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पुन: सान्त्वना दी जा रही है कि यह प्रथम घटना नहीं है कि काफ़िर अल्लाह के पैग़म्बरों का इंकार कर रहे हैं, अपितु इससे पूर्व बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं जिनको झुठलाया जाता रहा। उसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी उनका अनुकरण करते हुए उसी प्रकार धैर्य तथा साहस से काम लें जिस प्रकार से उन्होंने झुठलाने तथा कष्ट पहुँचाने पर धैर्य से काम लिया यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए भी हमारी सहायता पहुँच जाये, जिस प्रकार हमने पूर्व के रसूलों की सहायता की, तथा हम अपना वचन भंग नहीं करते। हमने वचन दिया है।

﴿ اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ﴾

"नि:सन्देह हम अपने पैग़म्बर तथा ईमानवालों की सहायता करेंगे ।" (*सूर: अल-मोमिन-५१*)

﴿ كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ﴾

"अल्लाह ने यह निर्णय कर दिया है कि मैं और मेरे रसूल प्रभावशाली रहेंगे ।" (*सूर: अल-मुजादिल:-२*)

इत्यादि आयतों से (जैसे *सूर: अल-साफ़्फ़ात*-१७१ तथा १७२ )

[2]अपितु उसका वचन पूर्ण होकर ही रहेगा कि आप काफ़िरों पर प्रभावशाली तथा विजयी रहेंगे। अतएव ऐसे ही हुआ।

[3]जिससे स्पष्ट हुआ कि प्रारम्भ में यद्यपि उनके समुदायों ने उन्हें झुठलाया, उन्हें कष्ट दिये तथा उनके जीवन का ख़तरा बन गये, परन्तु अन्ततः अल्लाह की कृपा से सफलता प्राप्त हुई तथा स्थाई मुक्ति उनका भाग्य बन गयी।

الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُم بِآيَةٍ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ ۚ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٥﴾

में कोई सुरंग अथवा आकाश में कोई सीढ़ी खोज लें और उनके पास कोई चमत्कार ला दें तथा यदि अल्लाह चाहता तोउन्हें सत्य मार्ग पर एकत्रित कर देता।[1] अत: मुर्खों में न बनिये।[2]

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۘ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

(३६) वही लोग स्वीकार करते हैं, जो सुनते है।[3] तथा मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) जीवित करके उठायेगा, फिर सब अल्लाह ही की ओर लाये जायेंगे।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۚ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَن يُنَزِّلَ

(३७) तथा उन्होंने कहा कि उन पर उनके पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं

---

[1] नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विरोधियों तथा काफ़िरों के झुठलाने से जो कष्ट तथा दुख पहुँचता था उसके आधार पर अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि ये तो अल्लाह तआला की इच्छा तथा भाग्य से होना ही था तथा अल्लाह के आदेश के बिना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करने लिए तैयार नहीं कर सकते, चाहे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धरती में सुरंग खोदकर तथा आकाश पर सीढ़ी लगाकर कोई निशानी लाकर उन्हें दिखा भी दें। प्रथम तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ऐसा करना असम्भव है। तथा यदि ऐसा मान भी लिया जाये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसा कर भी लें तो भी ये लोग ईमान न लायेंगे। क्योंकि उनका ईमान लाना अल्लाह तआला की इच्छा तथा आदेश के अधीन है जो पूर्ण रूप से मनुष्य की बौद्धिक सीमा से बाहर की बात है। अपितु उसका एक स्पष्ट प्रमाण यह है कि अल्लाह तआला उन्हें अधिकार तथा विचार की स्वतंत्रा देकर परीक्षा ले रहा है। वरन् अल्लाह तआला के लिए यह कठिन नहीं था कि सभी लोगों को सत्य कर्म में लगा दे। उसके लिए शब्द كن (कुन) से ही एक क्षण से भी कम में यह कार्य हो सकता है।

[2]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके अविश्वास से दुखी एवं चिन्तित न हों क्योंकि इसका सम्बन्ध अल्लाह तआला की इच्छा से है, इसलिए इसे अल्लाह के लिए ही छोड़ें, वही इसके कारण तथा समस्या को भली-भाँति समझता है।

[3]अर्थात उन काफ़िरों की अवस्था मृतकों के समान है जिस प्रकार से वह बोलने तथा सुनने की शक्ति से वंचित हैं, यह भी चूँकि अपनी बुद्धि तथा विचार से सत्य के समझने का काम नहीं लेते, इसलिए यह भी मृतक समान हैं।

ايَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾

उतारा गया ? आप कह दें कि अल्लाह कोई चमत्कार उतारने का पूर्ण सामर्थ्य रखता है।[1] किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।[2]

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَىْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

(३८) तथा जितने प्रकार के जीवधारी धरती पर चलने वाले हैं तथा जितने प्रकार के पंख से उड़ने वाले पक्षी हैं, उनमें से कोई भी प्रकार ऐसा नहीं जो कि तुम्हारी तरह के गुट न हों।[3] हमने पुस्तिका में लिखने से कोई वस्तु न छोड़ी।[4]

---

[1]अर्थात ऐसा चमत्कार जो उनको ईमान लाने पर बाध्य कर दे, जैसे कि उनकी आँखों के समक्ष फरिश्ता (स्वर्गदूत) उतरे, अथवा पर्वत को उठा कर उनके ऊपर कर दिया जाये, जिस प्रकार इस्राईल की सन्तान के साथ हुआ। कहा, अल्लाह तआला नि:सन्देह ऐसा कर सकता है परन्तु उसने ऐसा इसलिए नहीं किया कि फिर तो मनुष्यों की परीक्षा की समस्या ही समाप्त हो जायेगी। इसके अतिरिक्त उनकी माँग पर यदि कोई चमत्कार दिखा भी दिया जाता, फिर भी ये लोग ईमान न लाते, तो तुरन्त उन्हें इस संसार में कठोर दण्ड दे दिया जाता। इस प्रकार अल्लाह के इस निर्णय से उनका ही सांसारिक लाभ है।

[2]जो अल्लाह के आदेश तथा निर्णय का भेद नहीं समझ सकते।

[3]अर्थात उन्हें भी अल्लाह तआला ने उसी प्रकार जन्म दिया जिस प्रकार तुम्हें जन्म दिया, इसी प्रकार उन्हें भी जीविका उपलब्ध कराता है जिस प्रकार तुम्हें उपलब्ध कराता है तथा तुम्हारी ही तरह वह भी उसकी शक्ति तथा ज्ञान की परिधि में हैं।

[4]पुस्तिका से तात्पर्य लौह महफ़ूज़ है। (सुरक्षित पुस्तक है जिसमें सभी लोगों का भाग्य उन के कर्मानुसार अल्लाह के पूर्व ज्ञान के आधार पर सुरक्षित करके लिख दिया है) अर्थात वहाँ प्रत्येक चीज़ लिखी हुई है अथवा क़ुरआन है जिसमें संक्षिप्त तथा विस्तार पूर्वक धर्म के प्रत्येक नियम पर प्रकाश डाला गया है। जैसाकि अन्य स्थान पर फ़रमाया गया है।

﴿ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ﴾

"हमने आप पर ऐसी किताब उतारी है जिसमें प्रत्येक चीज़ का वर्णन है।" (*सूर: अल-नहल-८९*)

यहाँ पर विषय के आधार पर पहला अर्थ निकटतम है।

फिर सब अपने प्रभु के पास एकत्रित किये जायेंगे ।[1]

(३९) जिन लोगों ने हमारी आयतों को नहीं माना वह बहरे गूँगे अन्धकारों में हैं । अल्लाह जिसे चाहता है विपथ कर देता है तथा जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर लगा देता है ।[2]

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ ۗ مَن يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٩﴾

---

[1]अर्थात सभी वर्णित गुट एकत्रित कर दिये जायेंगे । इससे विद्वानों के एक गुट ने यह अर्थ निकाला है कि जिस प्रकार मनुष्यों को मृत्यु के उपरान्त जीवित करके एकत्रित करके उनके कर्मों का हिसाब होगा उसी प्रकार अन्य जीवों तथा अन्य सृष्टि को भी जीवित करके हिसाब होगा । जिस प्रकार से एक हदीस में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "यदि किसी सींग वाली बकरी ने बिना सींग वाली बकरी पर कोई अत्याचार किया होगा तो क़ियामत वाले दिन सींग वाली बकरी से बदला लिया जायेगा ।" (सहीह मुस्लिम संख्या १९९७) कुछ विद्वानों ने हश्र से तात्पर्य केवल मृत्यु लिया है अर्थात सभी को मृत्यु आयेगी । कुछ विद्वानों ने कहा है कि यहाँ हश्र से तात्पर्य अविश्वासियों का एकत्रित होना है । तथा मध्य में जो बाते आयीं हैं वे केवल एक मध्यावर्ती वाक्य है । तथा हदीस में जो बकरी से बदला लेने का वर्णन है यह उदाहरणार्थ प्रयोग हुआ है जिसका उद्देश्य क़ियामत के हिसाब-किताब की प्रबलता एवं विशेषता को स्पष्ट करना है । अथवा यह कि जीवधारियों में से केवल अत्याचारियों तथा जिन पर अत्याचार हुआ है दोनों को जीवित करके अत्याचारी से जिन पर अत्याचार हुआ है को बदला दिला कर पुनः मार दिया जायेगा । (फ़तहुल क़दीर आदि)

[2]अल्लाह की आयतों को झुठलाने वाले चूँकि अपने कानों से सत्य बात नहीं सुनते तथा अपने मुख से सत्य नहीं बोलते, इसलिए वह ऐसे हैं जैसे मूक तथा बधिर होते हैं । इसके अतिरिक्त यह कुफ़्र अपमान के अंधकार में घिरे हुए होते हैं इसलिए उन्हें कोई ऐसी वस्तु दिखायी नहीं देती जिससे वे अपना सुधार कर सकें । अर्थात जैसे उनकी चिन्तन शक्ति छीन ली गयी हो जिसके कारण वह परिस्थितियों से लाभ नहीं उठा सकते । फिर कहा, "सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में है जिसे वह चाहे भटका दे जिसे चाहे सीधे मार्ग पर लगा दे ।" परन्तु उसका यह निर्णय निराधार नहीं है, अपितु न्याय तथा निर्णय के नियम के आधार पर होता है । भटकाता उसे ही है जो स्वयं भटकना चाहता है तथा उससे निकलने का न तो प्रयत्न करना चाहता है न प्रिय समझता है । (इसके अतिरिक्त देखिये सूरः *अल-बक़रः* आयत संख्या २६ की व्याख्या)

قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُ ٱللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ ٱلسَّاعَةُ أَغَيْرَ ٱللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٤٠﴾

(४०) आप कह दीजिए कि अपना हाल तो बताओ कि यदि तुम पर अल्लाह की कोई यातना आ पड़े अथवा तुम पर क़ियामत ही आ पहुँचे तो क्या अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पुकारोगे ? यदि तुम सच्चे हो।

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَآءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

(४१) अपितु विशेषरूप से उसी को पुकारोगे, फिर जिसके लिए तुम पुकारोगे यदि वह चाहे तो उसको हटा भी दे तथा जिनकोतुम साझीदार ठहराते हो उन सभी को भूल जाओगे।[1]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَآ إِلَىٰٓ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَٰهُم بِٱلْبَأْسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ﴿٤٢﴾

(४२) तथा हमने अन्य समुदायों की ओर भी जो कि आप से पूर्व गुज़र चुके हैं पैग़म्बर भेजे थे, उनको भी हमने निर्धनता तथा रोग से पकड़ा ताकि वे शिथिल पड़ जायें।

فَلَوْلَآ إِذْ جَآءَهُم بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا۟ وَلَٰكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ ٱلشَّيْطَٰنُ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

(४३) इस प्रकार जो उन्हें हमारा दण्ड मिला था, वे शिथिल क्यों न पड़े? परन्तु उनके हृदय कठोर हो गये तथा शैतान ने उनके कर्मों को उनके विचारों में अलंकृत कर दिया।[2]

---

[1] أرءيتكم में काफ़, मीम, सम्बोधन के लिए है और इसका अर्थ यह है कि मुझे बताओ अथवा सूचित करो इस विषय कि चर्चा पवित्र क़ुरआन में कई स्थानों में की गई है, (देखिये सूर: बक़र: आयत १६५ का भाष्य) इसका भावार्थ यह हुआ कि एकेश्वरवाद मानव प्रकृति की ध्वनि है तथा वह समाज अथवा पूर्वजों की प्रथा के अनुसरण के कारण अनेकेश्वरवादी आस्था एवं कर्म में लिप्त हो जाता है। किन्तु जब किसी संकट में पड़ जाता है तो फिर यह सब भूल जाता है तथा सहसा उसी एक को पुकारता है जिसे पुकारना चाहिए। काश ! लोग इसी प्रकृति पर स्थिर रहें, क्योंकि मोक्ष इसी प्राकृतिक ध्वनि को अपनाने में है।

[2]जब समुदाय नैतिक तथा कर्मिक पतन के कारण अपने मनों को मलिन कर लेते हैं तो उस समय अल्लाह का प्रकोप भी उन्हें घोर अचेतना से सचेत करने में असफल हो जाता है तथा उनके हाथ क्षमा-याचना के लिए अल्लाह की ओर नहीं उठते तथा दिल अल्लाह

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُم بَغْتَةً فَإِذَا هُم مُّبْلِسُونَ ﴿٤٤﴾

(४४) तथा जब वह उस प्रसंग को भूल गये जिसकी शिक्षा दी गई तो हमने उन पर प्रत्येक वस्तु के द्वार खोल दिये यहाँ तक कि वह जब अपनी प्राप्त वस्तुओं पर इतरा गये तो उन्हें हमने अकस्मात धर लिया और वह निराश हो कर रह गये।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

(४५) फिर अत्याचारी लोगों की जड़ कट गयी तथा अल्लाह (तआला) की प्रशंसा है जो विश्व का पोषक है।[1]

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ۗ انظُرْ

(४६) (आप) कहिए कि यह बताओ यदि अल्लाह (तआला) तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति पूर्णरूप से ले ले तथा तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तोअल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई

---

के लिये नहीं झुकते, न उनका ध्यान सुधार की ओर फिरता है, अपितु अपने दुष्कर्मों के परिकल्पना के सुन्दर पर्दे में अवृत्त करके अपने मन को संतोष दे लेते हैं, जिसे शैतान (राक्षस) ने उनके लिये अलंकृत बना दिया है।

[1]इसमें उस समुदाय का वर्णन है जो अल्लाह को भूल गये। कभी सामयिक रूप से ऐसे समुदायों पर सुख-सुविधा के सभी साधनों के द्वार खोल देते हैं। यहाँ तक कि वह उसमें अति मग्न हो जाते हैं तथा अपने भौतिक सुख तथा उन्नति पर इतराने लगते हैं तब हम अपने हिसाब के लिए पकड़ लेते हैं तथा उनका उन्मूलन कर देते हैं। हदीस में आता है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम देखो कि अल्लाह तआला अवज्ञा उपरान्त किसी को उसकी इच्छानुसार दुनिया प्रदान कर रहा है तो यह ढील देना है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही आयत पढ़ी। (मुसनद अहमद भाग ४, पृष्ठ १४५) क़ुरआन करीम की इस आयत तथा हदीस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह ज्ञात हुआ कि सांसारिक सम्पन्नता तथा उन्नति इस बात का प्रमाण नहीं कि जिस व्यक्ति अथवा समुदाय को यह प्राप्त है वह अल्लाह तआला का प्रिय है तथा अल्लाह तआला उससे प्रसन्न है। जैसाकि कुछ लोग ऐसा समझते हैं अपितु कुछ तो उन्हें ﴿أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ﴾ का त्रताथ मानते तथा उन्हें पूनीत भक्त मानते हैं। ऐसा समझना तथा कहना ग़लत है। कुपथ समुदाय को सांसारिक खुशहाली, उन्नति तथा सुख परीक्षा एवं अवसर देने के लिए है न कि यह उनके अविश्वास का प्रतिफल है।

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾

पूज्य है कि यह तुम को पुन: दे दे ? आप देखिए कि हम किस प्रकार से तर्क को विभिन्न कोण से प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर भी वह कतरा रहे हैं।[1]

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾

(४७) (आप) कहिए कि यह बताओ यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप अकस्मात अथवा सावधानी में आ पड़े तो क्या सिवाये अत्याचारियों के अन्य कोई मारा जायेगा।[2]

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ

(४८) तथा हम पैग़म्बर को इसलिए भेजा करते हैं कि वे शुभ सूचना दें तथा डरायें।[3] फिर जो



---

[1]आंख कान तथा दिल मानव शरीर के प्रमुख अंग हैं, अल्लाह (परमेश्वर) कह रहा है कि यदि वह चाहे तो इन अंगों में जो विशेषतायें (योग्यतायें) रखी हैं उन्हें हर ले अर्थात सुनने देखने का सामर्थ्य। जिस प्रकार धर्मभ्रष्टों के अंग इन विशेषताओं से वंचित होते हैं अथवा वह चाहे तो इन अंगों ही को निरस्त कर दे वह दोनों बातों का सामर्थ्य रखता है, उस की पकड़ से कोई बच नहीं सकता है, परन्तु यह कि वह स्वयं किसी को बचाना चाहे। आयतों के विभिन्न रूप से प्रस्तुत करने का अभिप्राय यह है कि कभी डराने तथा शुभसूचना देने के द्वारा, कभी प्रलोभन तथा चेतावनी देने के द्वारा तथा कभी अन्य साधनों से।

[2]अकस्मात से तात्पर्य रात्रि तथा सावधानी से तात्पर्य दिन है जिसे *सूर: यूनुस* में ﴿بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا﴾ (सूर: यूनुस-५०) से वर्णित किया गया है अर्थात दिन में प्रकोप आ जाये या रात्रि को। بغتة फिर वह प्रकोप है जो बिना भूमिका एवं लक्षण के आ पड़े तथा جهرة वह प्रकोप है जो भूमिका एवं लक्षणों के उपरान्त आ पड़े। ये प्रकोप जो समुदायों के विनाश के लिए आता है। उन पर आता है जो अत्याचारी होते हैं अर्थात अविश्वास तथा अवज्ञा में अल्लाह के नियमों का अपार उल्लंघन करते हैं।

[3]वे आज्ञापालकों को उन पुरस्कारों तथा बड़ी प्रतिकार की शुभ सूचना देते हैं जो अल्लाह तआला ने स्वर्ग के रूप में उनके लिए तैयार कर रखी है, तथा अवज्ञाकारियों को उन यातनाओं से डराते हैं जो अल्लाह तआला ने उनके लिए नरक के रूप में तैयार कर रखी है।

وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾

ईमान ले आये तथा अपना सुधार कर ले उनको न कोई भय होगा ओर न वे दुखी होगें ।[1]

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा जो लोग हमारी आयतों को झुठलायें उनको प्रकोप पहुँचेगा क्योंकि वे अवज्ञाकारी हैं ।[2]

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۚ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

(५०) (आप) कह दीजिए कि न तो मैं तुम से यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह का कोष है तथा न मैं परोक्ष जानता हूँ तथा न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ । मैं तो केवल जो कुछ मेरे पास देववाणी आती है उसका अनुसरण करता हूँ ।[3] (आप) कहिए कि अंधा

---

[1]भविष्य अर्थात परलोक की आगामी परिस्थितियों का उन्हें भय नहीं तथा अपने पीछे दुनिया में जो कुछ वे छोड़ आये हैं अथवा संसार का जो सुख नहीं पा सके उस पर दुखी नहीं होंगे क्योंकि दोनों लोक में उनका संरक्षक तथा मित्र वह पालनहार है जो दोनो लोक का पोषक है ।

[2]अर्थात उन्हें यह यातना इसलिए होगी कि उन्होंने विश्वास नहीं किया न अल्लाह के बताये हुए मार्ग पर चले । अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया तथा उसके आदेशों का निरादर किया तथा अवैध एवं निषेध कार्य किये तथा उसका सम्मान कम करने का प्रयत्न किया ।

[3]"मेरे पास अल्लाह के कोष भी नही हैं" इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक प्रकार की शक्ति तथा सामर्थ्य मेरे पास नहीं है कि मै तुम्हें अल्लाह के आदेश तथा इच्छा के बिना कोई चमत्कार दिखा दूँ जैसाकि तुम चाहते हो, जिसे देखकर तुम्हें मेरी सत्यता पर विश्वास आ जाये । मेरे पास अप्रत्यक्ष का ज्ञान भी नहीं है जिससे मैं भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं से तुम्हें सतर्क कर सकूँ । मैं फ़रिश्ता (सुर) होने का दावा भी नहीं कर सकता कि तुम मुझे ऐसे कार्य करने के लिए बाध्य करो जो मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य से बाहर की बात हो । मैं तो केवल उस प्रकाशना (वह्यी) का पालनकर्ता हूँ जो मुझ पर उतारी गयी तथा इसमें हदीस भी है, जैसाकि आप ने फ़रमाया "मुझे क़ुरआन के साथ उसके सामान भी प्रदान किया गया ।" यह समान हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है ।

तथा आँख वाला किस प्रकार समान हो सकते हैं ?[1] तो क्या तुम विचार नहीं करते ।

وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُحْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

(५१) तथा ऐसे लोगों को डराइए जो इस बात का भय रखते हैं कि अपने प्रभु के समक्ष इस अवस्था में एकत्रित किये जायेंगे कि जितने अल्लाह के अतिरिक्त हैं न उनकी सहायता करेंगे तथा न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा, इस आशा के साथ कि वे डर जायेंगे ।[2]

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ۖ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾

(५२) तथा आप उन्हें न निकालिए जो प्रातः, संध्या अल्लाह की वंदना करते हैं, विशेष रूप से उसकी प्रसन्नता की चिन्ता करते हैं । उनका हिसाब तनिक भी आप से संबन्धित नहीं तथा आपका हिसाब तनिक भी उनसे संबन्धित नहीं कि आप उनको निकाल दें ।



---

[1]यह प्रश्न इंकार के लिए है अर्थात अन्धा तथा द्रष्टा, कुमार्ग तथा पथगामी, विश्वासधारी तथा अनिष्ठ समान नहीं हो सकते ।

[2]अर्थात डराने का लाभ ऐसे ही लोगों को हो सकता है, अन्यथा जो पुनर्जीवन तथा प्रलय एवं एकत्रित किये जाने पर विश्वास नहीं रखते, वह अपने अविश्वास तथा अवज्ञा पर अडिग रहते हैं । इसके अतिरिक्त उन अहले किताब तथा काफ़िरों एवं मूर्तिपूजकों का खंडन भी है जो अपने पूर्वजों तथा अपनी मूर्तियों को अपना सिफ़ारिशी समझते हैं । "अर्थात वे कष्ट निवारक, सिफ़ारशी नहीं होंगे" का अर्थ उनके लिए है जो नरक की यातना के पात्र हो चुके हों । वरन् ईमानवालों के लिए तो अल्लाह के सत्कर्मी भक्त, अल्लाह के आदेश से सिफ़ारिश करेंगे अर्थात सिफ़ारिश अनिष्ठों तथा मूर्तिपूजकों के लिए नहीं होगी तथा यह सिफ़ारिश उन ईमान वालों के लिए होगी जिनसे कोई पाप हो गया, परन्तु वे अल्लाह के एक होने पर पूर्ण विश्वास करते होंगे । इस प्रकार दोनों आयतों में कोई मतभेद भी नहीं रहता है ।

अपितु आप अनर्थ कार्य करने वालों में से हो जायेंगे ।[1]

(५३) इसी प्रकार हमने उन्हें परस्पर परीक्षा में डाल दिया ताकि यह कहें कि क्या अल्लाह ने हमारे बीच से उन पर उपकार किया है[2] क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह कृतज्ञता व्यक्त करने वालों को खूब जानता है ।[3]

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَاۤءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

---

[1]अर्थात ये असहाय, निर्धन मुसलमान जो बड़े नि:स्वार्थ भाव से रात-दिन अपने प्रभु को पुकारते हैं अर्थात उसकी इबादत (आराधना) करते हैं । आप मूर्तिपूजकों के इन बातों तथा माँगों पर कि हे मुहम्मद ! (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे निकट तो निर्धन तथा भिखारियों की ही भीड़ लगी रहती है, यदि तुम उनको हटाओ तो हम भी तुम्हारे पास बैठें, इन निर्धनों को अपने से दूर न करना, विशेष रूप से जब कि आप के हिसाब का उनसे सम्बंध नहीं तथा उनका आप से सम्बन्धित नहीं । (यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचार होगा जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मे मान-सम्मान के अनुरूप नहीं है । उद्देश्य समुदाय को समझाना था कि असहाय लोगों को तुच्छ समझना उनका साथ करने से बचना तथा उनसे सम्बन्ध न रखना, यह अज्ञानियों का कार्य है, ईमानवालों का नहीं । ईमानवाले तो इमानवालों से प्रेम करते हैं चाहे वे निर्धन अथवा भिखारी ही क्यों न हों ।

[2]प्रारम्भ में अधिकतर निर्धन अथवा दास लोग ही मुसलमान हुए थे, इसलिए यही बात धनवान काफ़िरों की परीक्षा का कारण बन गयी तथा वे इन निर्धनों का उपहास करते थे तथा जिन पर उनका नियन्त्रण था उन्हें वे कष्ट भी देते थे तथा कहते थे कि क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने उपकार किया है ? उनका तात्पर्य यह होता था कि ईमान तथा इस्लाम यदि वास्तव में अल्लाह का उपकार होता तो यह सर्वप्रथम हम पर होता जिस प्रकार अन्य स्थानों पर कहा है ।

﴿لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ﴾

"यदि यह अच्छी चीज़ होती तो इसे स्वीकार करने में हमसे आगे न होते ।" (सूर: अल-अह्क़ाफ़-११)

अर्थात हीनों के सापेक्ष हम पहले मुसलमान होते ।

[3]अर्थात अल्लाह तआला उपरी चमक-दमक, भेष-भूषा तथा वैभव को नहीं देखता । वह तो दिल की अवस्था को देखता तथा उसी से जानता है कि कृतज्ञ तथा सच्चे भक्त कौन हैं ?

وَإِذَا جَآءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ سُوٓءًا بِجَهَٰلَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنۢ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٤﴾

(५४) तथा आप के पास जब वह लोग आयें जो हमारी आयतों के प्रति विश्वास रखते हैं तो कह दीजिए, "तुम सुरक्षित रहो ।"[1] तुम्हारे पालनहार ने अपने ऊपर कृपा अनिवार्य कर लिया है ।[2] कि तुम में से जिसने मूर्खता से दुराचार कर लिया फिर तत्पश्चात क्षमा-याचना एवं सुधार कर लिया तो अल्लाह क्षमाशील कृपालु है ।[3]

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٥٥﴾

(५५) इसी प्रकार हम अपनी आयतों का विस्तृत वर्णन करते हैं ताकि अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाये ।

---

अतः उसने जिसके अन्दर कृतज्ञता देखी उसको ईमान के गुण से सुसज्जित कर दिया, जिस प्रकार से हदीस में आता है, "अल्लाह तआला तुम्हारे रूप तथा धन नहीं देखता, वह तो तुम्हारे कर्म देखता है ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्र बाब तहरीम ज़ुल्मिल मुस्लिमे व खजलेहि व एहतकारेहि व दमेहि व इर्देहि)

« إِنَّ اللهَ لَا يَنْظُرُ إِلَىٰ صُوَرِكُمْ وَلَا إِلَىٰ أَلْوَانِكُمْ، ولكِنْ يَنْظُرُ إِلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ ».

"अल्लाह तआला तुम्हारी शक्लें तथा रंगों को नहीं देखता है अपितु तुम्हारे दिलों तथा कर्मों को देखता है ।" (सहीह मुस्लिम व मुसनद अहमद २ २८५ तथा ५३९, इब्ने माअज किताबुल जुहद, बॉबुल कनाआ :)

[1]अर्थात उनको सलाम करके अथवा उनके सलाम का उत्तर देकर उनको सम्मानित करें ।

[2]तथा उन्हें शुभसूचना दे दीजिए कि अल्लाह ने अपनी दया एवं अनुग्रह से अपने कृतज्ञ भक्तों पर उपकार करने का निर्णय कर लिया है ।जिस तरह हदीस में आता है कि जब अल्लाह तआला सृष्टि की रचना कर चुका तो उसने अर्श पर लिख दिया । « إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي ». "मेरी कृपा मेरे क्रोध पर प्रभावशाली है ।" (सहीह मुस्लिम तथा बुखारी)

[3]इस में भी ईमानवालों के लिए शुभ सूचना है क्योंकि उन का ही यह गुण है कि यदि अज्ञानवश अथवा मानव अभियाचना से कोई पाप कर बैठें तो फिर तुरंत क्षमा माँगते हैं तथा अपना सुधार कर लेते हैं । पाप की पुनरावृत्ति नहीं करते ।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ قُلْ لَا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

(५६) (आप) कह दीजिए कि मुझे रोका गया है कि उनकी पूजा करूँ जिनको अल्लाह के सिवाये तुम पुकारते हो, आप कहिए कि मैं तुम्हारी मनमानी का अनुसरण न करूँगा क्योंकि ऐसी दशा में मैं कुपथ हो जाऊँगा एवं संमार्ग पर नहीं रह जाऊँगा ।[1]

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۚ مَا عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ الْحَقَّ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ﴿٥٧﴾

(५७) (आप) कह दीजिए कि मेरे पास एक प्रमाण है मेरे प्रभु की ओर से [2] तथा तुम उसको झुठलाते हो, जिस वस्तु की तुम शीघ्रता कर रहे हो वह मेरे पास नहीं। आदेश किसी का नहीं सिवाये अल्लाह के ।[3] अल्लाह तआला वास्तविक बातों को बता देता है ।[4] तथा वही सर्वश्रेष्ठ निर्णायक है ।

---

[1]अर्थात यदि मैं भी तुम्हारी तरह अल्लाह की इबादत (आराधना) के बजाय, तुम्हारी इच्छाओं के अनुसार अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की इबादत करना प्रारम्भ कर दूँ तो अवश्य मैं भटक जाऊँगा अर्थ यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की पूजा तथा उपासना करना सबसे बड़ा भटकाव है, परन्तु दुर्भाग्य से यह भटकाव उतना ही सामान्य है, यहाँ तक कि मुसलमानों का एक गुट इसमें लिप्त है। هداهم الله تعالى

[2]तात्पर्य वह धार्मिक नियम हैं जो प्रकाशनाओं (ईशवाणी) द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारे गये, जिसमें एकेश्वरवाद को प्राथमिकता प्राप्त है।

[3]सम्पूर्ण सृष्टि पर अल्लाह ही का आदेश चलता है तथा सभी समस्याओं का समाधान उसी के हाथों में है। इसलिए तुम जो चाहते हो कि अल्लाह का प्रकोप शीघ्र ही आ जाये ताकि तुम्हें मेरी सत्यता अथवा झूठ का पता चल जाये, तो यह भी अल्लाह के वश में है, वह यदि चाहे तो तुम्हारी इच्छानुसार शीघ्र ही प्रकोप भेज कर तुम्हें सतर्क कर दे अथवा नष्ट कर दे तथा चाहे तो उस समय तक तुम्हें अवसर दे जब तक वह चाहे।

[4] يقص "क़सस" धातु से बना है जिसका अर्थ है वर्णन करना अथवा قص أثره किसी के पीछे लगना तथा अनुसरण करना से लिया गया है जिसका अर्थ यह है कि सत्य उस के निर्णय ही में निहित है।

قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۸﴾

(५८) आप कह दीजिए कि यदि मेरे पास वह जिसकी तुम तुरंत माँग कर रहे हो, होती तो मेरे और तुम्हारे मध्य (विवाद का) निर्णय हो गया होता ।[1] तथा अल्लाह पापियों को भली-भाँति जानता है ।

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ

(५९) तथा उसी (अल्लाह) के पास परोक्ष की कुंजियाँ हैं जिनको मात्र वही जानता है तथा जो थल एवं जल में हैं उन सभी को जानता है तथा जो पत्ता गिरता है उसे भी जानता है तथा धरती के अंधकारों में कोई भी अन्न नहीं

---

[1]अर्थात यदि अल्लाह तआला मेरे माँग करने पर तुरन्त प्रकोप भेज देता अथवा अल्लाह तआला मेरे वश में यह चीज दे देता तो फिर तुम्हारी इच्छा के अनुसार प्रकोप भेजकर निर्णय कर दिया जाता । परन्तु यह कार्य पूर्ण रूप से अल्लाह की इच्छा पर आधारित है, इसलिए यह अधिकार मुझे नहीं दिया है तथा न यह सम्भव है कि मेरी प्रार्थना पर तुरन्त प्रकोप डाल दे ।

**आवश्यक स्पष्टीकरण** : हदीस में वर्णित है कि एक अवसर पर अल्लाह के आदेश पर पर्वतों का फ़रिश्ता नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा उसने कहा कि "यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे आदेश दें तो मैं पूरी अबादी को दोनों पर्वतों के बीच कुचल दूँ ।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "नहीं, अपितु मुझे आशा है कि अल्लाह तआला उनके वंश में अल्लाह की इबादत करने वाले पैदा करे, जो उसके साथ किसी को भी सम्मिलित न करेंगे ।" (सहीह बुख़ारी किताबु वदइल ख़लक़े, बाब इज़ा क़ाल अहदोकुम अमीन वल मलायेक: फ़िस्समा ए ; सहीह मुस्लिम किताबुल जिहाद, बाब मालकेयन्नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मिन अजल मुशरिकीन) यह हदीस प्रस्तुत आयत की व्याख्या के विरुद्ध नहीं है, जैसाकि प्रकट हो रहा है । इसलिए कि आयत में प्रकोप की माँग पर प्रकोप देने का प्रदर्शन हो रहा है । इस हदीस में मूर्तिपूजकों की माँग के बिना, केवल उनके कष्ट देने के कारण उन पर प्रकोप भेजने का विचार प्रदर्शित किया जा रहा है जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार नहीं किया ।

إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

पड़ता और न कोई तर तथा शुष्क वस्तु गिरती है परन्तु ये सब खुली किताब में है।[1]

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّىٰكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

(६०) वही (अल्लाह) है जो रात्रि में तुम्हारी आत्मा को एक गुणा नियंत्रित करता है[2] तथा दिन में जो जो भी करते हो जानता है[3] फिर तुम्हें उसमें एक निर्धारित अवधि पूरी करने के लिये जागृत करता है।[4] फिर तुम्हें उसी की ओर लौट जाना है।[5] फिर जो तुम करते रहे उसे तुमको बता देगा।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ

(६१) वही अपने भक्तों पर प्रभावशाली है तथा तुम पर संरक्षक (फ़रिश्ते) भेजता है यहाँ तक कि जब तुम में किसी की मृत्यु (का समय) आ

---

[1]"किताब मोबीन" से तात्पर्य "सुरक्षित पुस्तक" है। इस आयत से भी ज्ञात हुआ कि परोक्ष का ज्ञान मात्र अल्लाह को ही है। सभी अप्रत्यक्ष का कोष उसी के पास है। इसलिए कृतघ्नों, मूर्तिपुजकों तथा विरोधियों पर कब प्रकोप डाला जाये इसका भी ज्ञान अल्लाह ही को है, तथा वही अपनी इच्छानुसार इसका निर्णय करने वाला है। हदीस में आता है कि भेद (परोक्ष) की बातें पांच हैं १. क़ियामत का ज्ञान, २. वर्षा का आना, ३. माता के गर्भ में पलने वाला बच्चा, ४. कल भविष्य में होने वाली घटना तथा ५. मृत्यु किस स्थान पर आयेगी। इन पाँचों बातों का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। (सहीह/बुख़ारी तफ़सीर *सूरः अल-अनाम*)

[2]यहाँ निद्रा को मृत्यु कहा गया है, इसलिए इसे "छोटी मृत्यु" तथा मृत्यु को "बड़ी मृत्यु" कहा गया है। मृत्यु के स्पष्टीकरण के लिए देखें *सूरः आले इमरान* आयत संख्या ५५ की व्याख्या)

[3]अर्थात दिन के समय आत्मा वापस लौटा कर जीवित कर देता है।

[4]अर्थात यह रात्रि-दिवस का क्रम तथा लघु मृत्यु के पश्चात जीवित हो जाने का क्रम महा मृत्यु तक निरन्तर रहेगा।

[5]अर्थात फिर क़ियामत वाले दिन जीवित होकर सभी को अल्लाह के दरबार के समक्ष उपस्थित होना है।

لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾

जाये तो हमारे यमदूत उस के प्राण निकाल लेते हैं और वे तनिक आलस्य नहीं करते ।[1]

ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۫ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾

(६२) फिर वे अपने सत्य स्वामी (अल्लाह) के पास लाये जायेंगे ।[2] सावधान, उसी का आदेश चलेगा तथा वह अति शीघ्र हिसाब लेगा ।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) आप कहिये कि थल तथा जल के अंधकारों से जब उसे नम्रता और चुपके से पुकारते हो कि यदि हमें इससे मुक्त कर दे तो तेरे अवश्य कृतज्ञ हो जायेंगे तो तुम्हें कौन बचाता है ?

قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) आप स्वयं कहिये कि इससे तथा प्रत्येक विपदा से तुम्हें अल्लाह ही बचाता है, फिर भी तुम ही मिश्रण (शिर्क) करते हो ।



[1] अर्थात अपने इस कर्तव्य के पालन तथा आत्मा की सुरक्षा में, अपितु यह फ़रिश्ता, मरने वाला यदि पुण्य करने वाला है तो उसकी आत्मा को श्रेष्ठ स्थान पर तथा यदि कुकर्मी है तो यातना के स्थान में भेज देता है।

[2] आयत (मंत्र) में رُدُّوْا (लौटाये जायेंगे) को कुछ ने यमदूतों से सम्बन्धित माना है अर्थात वह प्राण निकाल कर अल्लाह की ओर वापस जाते हैं। कुछ व्याख्याकारों ने साधारण लोगों की ओर सर्वनाम को फेर कर यह अर्थ लिया है कि जब लोग एकत्रित होकर अल्लाह के सदन में न्याय के लिये लाये जायेंगे फिर वह सब का निर्णय करेगा। आयत से विदित होता है कि यमदूत कई हैं क्योंकि उनके लिये वहुवचन का प्रयोग किया गया है । कुछ व्याख्याकारों ने कहा है कि यमदूत तो वास्तव में एक है किन्तु उनके सहायक वहुत से हैं। इसलिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है तथा जिस आयत में यमदूत एक कहा गया है वह इसलिये कि प्राण लेकर वही आकाशों में जाता है (तफ़सीर रूहुल मआनी) इमाम शौकानी एवं साधारणत: विद्वानों का कथन है कि यमदूत एक ही है तथा वहुवचन का प्रयोग उसके सहायकों के सहित किया गया है। कुछ कथनों में यमदूत का नाम इज्राईल बताया गया है। (तफ़सीर इब्ने कसीर *अलिफ़ लाम मीम सजद:*)

(६५) आप कहिये कि वही तुम पर तुम्हारे ऊपर से कोई प्रकोप भेजने[1] अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे[2] से भेजने अथवा तुम्हें अनेक गिरोह बनाकर परस्पर लड़ाई का स्वाद चखाने का सामर्थ्य रखता है ।[3] आप देखिये कि हम विभिन्न प्रकार से कैसे बातों (आयतों) का वर्णन कर रहे हैं ताकि वह समझ जायें ।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَن يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ أَوْ مِن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُم بَأْسَ بَعْضٍ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

(६६) तथा आप के समुदाय ने उसे[4] झुठला दिया जब कि वह सत्य है । आप कह दीजिए कि

وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُل لَّسْتُ عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ﴿٦٦﴾

---

[1]आकाश से जैसे वर्षा की अधिकता अथवा वायु तथा पत्थर के द्वारा प्रकोप अथवा अधिकारियों की ओर से अत्याचार एवं क्रूरता ।

[2]जैसे धंसाया जाना, तूफ़ान बाढ़, जिसमें सब कुछ डूब जाता है अथवा तात्पर्य है कि अधीनस्थ कर्मचारी, दासों तथा नौकरों की ओर से प्रकोप कि वे विश्वासघाती तथा अपभोगी हो जायें ।

[3]तुम्हारी समस्यायों को मिला-जुला अथवा संदेहास्पद बना दे जिसके कारण तुम गुटों में बंट जाओ तथा तुम्हारा एक गुट दूसरे गुट की हत्या करे । इस प्रकार प्रत्येक गुट को लड़ाई का स्वाद चखाये । (ऐसरुत्तफ़ासीर) हदीस में आता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैने अल्लाह तआला से तीन प्रार्थनायें कीं १. मेरे अनुयायियों को डुबोकर न मारा जाये, २. सामान्य रूप से सूखा डाल कर उनको नष्ट न किया जाये ३. आपस में उन की लड़ाई न हो । अल्लाह ने प्रथम दो प्रार्थनाओं को स्वीकार किया परन्तु अन्तिम से मुझे रोक दिया । (सहीह मुस्लिम संख्या २२१६) अर्थात अल्लाह तआला को यह ज्ञान था कि मुसलमानों में मतभेद होगा तथा कई गुटों में बंट जायेंगे तथा उसका कारण अल्लाह की अवज्ञा तथा क़ुरआन व हदीस का इंकार होगा जिसके परिणाम स्वरूप प्रकोप से मुसलमान भी सुरक्षित न रह सकेंगे । अर्थात इसका सम्बन्ध अल्लाह के उस आदेश से है जो समुदाय के चरित्र तथा कर्म के विषय में सदैव रहा है जिसमें परिवर्तन सम्भव नहीं । ﴿فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا﴾ (सूरः फ़ातिर-४३)

[4] بِهِ (अरबी शब्द) का संकेत क़ुरआन है अथवा प्रकोप । (फ़तहुल क़दीर)

मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ ।[1]

لِكُلِّ نَبَإٍ مُّسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

(६७) प्रत्येक भविष्यवाणी का एक निश्चित समय है तथा तुम शीघ्र ही जान लोगे।

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾

(६८) तथा जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में कुरेद कर रहे हैं, तोउन लोगों से अलग हो जायें, यहाँ तक कि वह अन्य कार्य में लग जायें तथा यदि आप को शैतान भुला भी दे, तो याद आने के पश्चात फिर ऐसे अत्याचारी लोगों के साथ मत बैठें ।[2]

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَيْءٍ وَلَٰكِن ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा जो लोग परहेज़गारी रखते हैं उन पर उनके पकड़ का कोई प्रभाव नहीं होगा ।[3]



[1]अर्थात मुझे इस कार्य के पूर्ण करने के लिए निर्धारित नहीं किया गया है कि मैं तुम्हें सीधे रास्ते पर लगाकर ही छोड़ूँ, अपितु मेरा कार्य केवल धर्म की ओर आमन्त्रित करना तथा सतर्क करना है [الكهف:٢٩] ﴿فَمَن شَاءَ فَلْيُؤْمِن وَمَن شَاءَ فَلْيَكْفُرْ﴾ अर्थात जो चाहे विश्वास करे जो चाहे अविश्वास करे। (*सूर: अल-कहफ़*)

[2]इस आयत में यद्यपि संबोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किया गया है किन्तु इससे सम्वोधित प्रत्येक मुसलमान है। यह अल्लाह का बलपूर्वक आदेश है जिसे पवित्र क़ुरआन में कई स्थानों में वर्णित किया गया है। सूर: निसा आयत नं॰ १४० में भी इस विषय की चर्चा आ चुकी है। इससे प्रत्येक ऐसी सभा तात्पर्य है जिसमें अल्लाह एवं रसूल के आदेशों का उपहास किया जाता हो अथवा व्यवहारिक रूप से उनकी अवहेलना की जाती॰ हो अथवा धर्मभ्रष्ट अपनी कष्ट कल्पनाओं के द्वारा आयात (पवित्र क़ुरआन के मंत्रों) के अर्थों को छिन्न-भिन्न कर रहे हों। ऐसी सभाओं में आलोचना एवं सत्य की सहायता के लिये जाना उचित है अन्यथा घोर पाप एवं अल्लाह के क्रोध का कारण है।

[3] مِنْ حِسَابِهِم का सम्बन्ध उनसे है जो अल्लाह की आयतों का उपहास करते हैं, जो लोग ऐसी सभा से बचेंगे, वह अल्लाह की आयतों के उपहास के दंड से सुरक्षित रहेंगे।

तथा परन्तु उनके अधिकार में शिक्षा देना है, शायद वे भी परहेज़गारी रखने लगें ।[1]

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝

(७०) तथा ऐसे लोगों से कदापि सम्बन्ध न रखें जिन्होंने अपने धर्म को खेल बना रखा है तथा सांसारिक जीवन ने उन्हें धोखे में डाल रखा है तथा इस क़ुरआन के द्वारा शिक्षा भी देते रहें ताकि कोई व्यक्ति अपने कर्म के कारण इस प्रकार न फंस जाये ।[2] कि कोई अल्लाह के अतिरिक्त उसका न सहायता करने वाला हो तथा न सिफ़ारिश करने वाला तथा यह अवस्था हो कि यदि दुनिया भर के बदले दे डाले तब भी उसे न लिया जाये ।[3] ऐसे ही हैं कि अपने कर्मों के कारण फंस गये, उनके

---

[1]अर्थात बचाव तथा विलगाव के साथ ही यदि शिक्षा-दीक्षा एवं पुण्य का आदेश देने तथा कुकर्म से रोकने का कर्तव्य यथासम्भव पूरा करते रहें तो सम्भव है कि वह इस दुष्कर्म से रुक जायें ।

[2] بَسَلَ (बसल) का वास्तविक अर्थ "मना करना" है, परन्तु यहाँ पर इसके अनेक अर्थ किये गये हैं १. تُسَلَّمُ "सौंप दिये जायें ।" २. تُفْضَحُ (तुफ़दह) "अपमानित कर दिया जाये ।" ३. تُؤاخَذُ "पकड़ लिया जाये ।" तथा ४. تُجازَى (तुजाज़ा) "बदला दिय जाये ।" इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि सभी के अर्थ लगभग एक ही हैं सारांश यह है कि उन्हें इस क़ुरआन के द्वारा शिक्षा दें । ऐसा न हो कि अपने आप को जो उसने कमाया, उसके बदले विनाश में डाल दिया जाये अथवा अपमान उनका भाग्य बन जाये अथवा हिसाब में उनकी पकड़ हो जाये । इन सभी भावों को लेकर अनुवाद "फंस न जाये किया गया है ।"

[3]संसार में कोई व्यक्ति समान्यतया किसी मित्र की सहायता अथवा किसी सिफ़ारिश अथवा धन देने के कारण छूट जाता है । परन्तु आख़िरत में यह तीनों साधन काम नहीं आयेंगे । वहाँ काफ़िरों की सहायता करने वाला कोई नहीं होगा जो अल्लाह की पकड़ से बचा ले तथा न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा जो अल्लाह की यातना से उन्हें छुड़ा दे तथा न किसी के पास बदला देने के लिए कुछ होगा, यदि मान भी लिया जाये कि हो भी तो वह स्वीकार न किया जायेगा कि वह देकर छूट जायें ।

लिए अत्यधिक गर्म पानी पीने के लिए होगा अपने कुफ़्र के कारण।

(७१) आप कहिए कि क्या हम अल्लाह के सिवाये उसे पुकारें जो हमारा भला-बुरा न कर सकता हो तथा अल्लाह का मार्गदर्शन मिलने के पश्चात उसके समान एड़ियों के बल फेर दिये जायें जिसे शैतान ने बहका दिया हो और वह धरती में चकित फिर रहा हो, उसके साथी उसे सही मार्ग की ओर पुकार रहे हों कि हमारे पास आओ।[1] आप कहिये कि अल्लाह का मार्गदर्शन ही वास्तव में मार्गदर्शन है[2] तथा हमें आदेश किया गया है कि विश्व के विधाता के प्रति आत्मसमर्पण कर दें।

قُلْ أَنَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ ۖ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾



---

[1]यह उन लोगों का उदाहरण है जो विश्वास के बाद अविश्वास तथा एकेश्वरवाद के बाद अनेकेश्वरवाद की ओर फिर जायें। उनका उदाहरण ऐसा ही है कि वह अपने साथियों से बिछड़कर जंगलों में चकित हो कर परेशानी की अवस्था में भटकता फिर रहा हो, साथी उस को बुला रहे हों परन्तु चकित होने के कारण कुछ न दिखायी पड़ रहा हो अथवा जिन्नातों के पंजे में फंसने के कारण सही मार्ग पर आना असम्भव हो।

[2]अर्थात जो विश्वास और अद्वैत का मार्ग अपनाने के पश्चात भटक गया हो, वह भटके हुए राही की भाँति सही मार्ग पर नहीं आ सकता। परन्तु यदि अल्लाह ने उस को राह पर आना भाग्य में लिख दिया हो तो अवश्य अल्लाह के आदेश के कारण मार्गदर्शन पा जायेगा। क्योंकि सच्चे मार्ग पर चलाना उसी का काम है। जैसाकि अन्य स्थान पर फ़रमाया गया है।

﴿ إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴾

"यदि आप उनके मार्गदर्शन की इच्छा रखते हों तो अल्लाह जिसे विपथ कर दे उसे मार्गदर्शन नहीं देता तथा उसका कोई सहाय नहीं।" (सूर: *अन्नहल*-३७)

परन्तु यह मार्ग दर्शन तथा भटकाव उसी नियम के आधार पर होता है, जो अल्लाह तआला ने उसके लिए बनाया है। यह नहीं कि यूँ ही जिसे चाहे भटका दे तथा जिसको चाहे मार्ग दर्शन दे।

(७२) तथा नमाज़ की स्थापना करो एवं उस (अल्लाह) से डरो ।[1] वह वही है जिस की ओर तुम एकत्रित किये जाओगे ।

وَ اَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ۚ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

(७३) उसी ने आकाशों एवं पृथ्वी को यथार्थ के साथ पैदा किया ।[2] तथा जिस दिन[3] कहेगा "हो जा" तो हो जायेगा । उसका कथन सत्य है तथा जिस दिन नरसिन्घा फूँका जायेगा ।[4] राज्य

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۚ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ۚ

---

[1]इस का अर्थ यह है कि हमें यह आदेश दिया गया है कि सर्वजगत के पालनहार के अधीन हो जायें तथा उससे डरें, अल्लाह के प्रति विश्वास एवं उसकी अधीनता स्वीकारने के पश्चात सर्व-प्रथम आदेश नमाज़ की स्थापना का है जिस से नमाज़ का महत्व स्पष्ट है तत्पश्चात संयम बरतने का आदेश है, क्योंकि संयम और नम्रता के बिना नमाज़ का पालन असम्भव है । ﴿وَاِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ﴾ (सूर: अल-बक़र:-४५)

[2]सत्यता के साथ अथवा लाभकारी उत्पन्न किया अर्थात उनको अकारण एवं व्यर्थ (आमोद-प्रमोद के लिए) नहीं पैदा किया, अपितु एक विशेष उद्देश्य से सृष्टि को पैदा किया तथा वह यह है कि अल्लाह को याद रखो, तथा कृतज्ञता व्यक्त करते रहो जिसने यह सब कुछ रचा है ।

[3] يَـــوْمَ लुप्त क्रिया وَاذْكُرْ अथवा وَاتَّقُوْا से सम्बन्धित है । अर्थात उस दिन को याद करो अथवा उस दिन से डरो कि उसके शब्द (कुन) "हो जा" से जो चाहेगा हो जायेगा । यह संकेत है उस बात की ओर कि हिसाब-किताब की कठिन समस्या भी बड़ी सरलता से समाधान कर लिया जायेगा । परन्तु किन लोगों के लिए ऐसा होगा ? यह मात्र ईमानदारों के लिए ऐसा होगा । अन्य लोगों के लिए तो यह दिन हज़ार वर्ष अथवा पचास हजार वर्ष की तरह भारी लगेगा ।

[4] صُـــوْرٌ से तात्पर्य नरसिंगा अथवा बिगुल है जिसके विषय में हदीस में आता है कि इस्राफ़ील (एक फ़रिश्ता का नाम) उसे मुख में लिये माथा भुकाये खड़े अल्लाह की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे है कि आदेश मिलते ही उसमें फूंक दें । (इब्ने कसीर) हदीस की पुस्तक त्रिमिज़ी तथा अबू दाऊद में है कि सूर एक नरसिंगा है (क्रम संख्या, ४७४२, ४० ३०, ३२४४) कुछ विद्वानों का विचार है कि तीन बार फूंका जायेगा । एक जिस से सभी प्राणी अचेत हो जायेंगे दूसरा जिससे सब का विनाश हो जायेगा तीसरी बार फूँकने पर सभी प्राणी पुन: जीवित हो जायेंगे कुछ विद्वान अंत की दो ही फूंक मानते हैं ।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ﴿٧٣﴾

मात्र उसी का होगा, वह ज्ञाता है अदृश्य एवं दृश्य का तथा वह सर्वज्ञाता सर्व-सूचित है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً ۖ إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٧٤﴾

(७४) तथा स्मरण करो जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र[1] से कहा क्या आप मूर्तियों को पूज्य बना रहे हैं ? मैं आप को तथा आप के वर्ग को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।

وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ﴿٧٥﴾

(७५) तथा इसी प्रकार हमने इब्राहीम को आकाशों एवं धरती का राज्य (सृष्टि) दिखायी ताकि वह पूर्ण विश्वास करने वालों में हो जायें।[2]

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ ﴿٧٦﴾

(७६) फिर जब उन पर रात्रि आच्छादित हो गयी तो एक तारा देखा, कहा कि यह मेरा प्रभू है फिर जब वह डूब गया तो कहा कि मैं डूबने वाले से प्रेम नही करता।[3]



---

[1]इतिहासकार आदरणीय इब्राहीम के पिता के दो नाम बताते हैं। यह नाम आज़र तथा तारूख हैं। सम्भव है कि दूसरा नाम उपाधि हो। कुछ कहते हैं कि आज़र आप के चचा का नाम था, परन्तु यह सही नहीं है, इसलिए कि क़ुरआन ने आज़र की चर्चा आदरणीय इब्राहीम के पिता के रूप में की है। अतएव सही यही है।

[2] مَلَكُوتٌ यह रूप अतिशयवादी है जैसे رَغَبَةٌ से رَغَبُوت तथा رَهبَةٌ से رَهبُوت। अत: इससे तात्पर्य सृष्टि है। जैसाकि अनुवाद में इसी विषय को अपनाया गया है। अथवा ربوبيت तथा الوهيت है अर्थात हमने उसको वह दिखलायी तथा उसको जानने का सौभाग्य प्रदान किया। अथवा यह अर्थ है कि आकाश लोक से लेकर पाताल तक का हमने इब्राहीम को दर्शन कराया। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात डूबने वाले ईष्टदेवों से प्रेम नहीं रखता, इसलिए कि डूबना स्थिति के परिवर्तन को प्रदर्शित करता है, जो अनित्य है तथा अनादि होने का प्रमाण नहीं है और जो स्वयं अनित्य हो वह पूज्य नहीं हो सकता।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾

(७७) फिर जब चन्द्रमा को चमकते देखा तो कहा यह मेरा प्रभु है, फिर जब वह अस्त हो गया, तो कहा कि यदि मेरे स्वामी ने मुझे मार्ग नहीं दर्शाया तो मैं विपथों में हो जाऊँगा।

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

(७८) फिर सूर्य को चमकता हुआ देखा तो कहा कि यह मेरा प्रभु है।[1] यह तो सबसे बड़ा है, फिर जब वह अस्त हो गया तो कहा कि निःसंदेह मैं तुम्हारे मिश्रणवाद से निर्दोष हूँ।[2]

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) मैंने अपना मुख उसकी ओर फेर दिया।[3] जिसने आकाशों एवं धरती को पैदा किया एकाग्रचित होकर तथा मैं मिश्रणवादियों (अनेकेश्वरवादियों) में से नहीं हूँ।

---

[1]सूर्य अरबी भाषा में स्त्रीलिंग है परन्तु सांकेतिक संज्ञा पुल्लिंग है। तात्पर्य उदय है अर्थात उदित सूर्य मेरा पोषक है, क्योंकि यह सबसे बड़ा है, जिस प्रकार से सूर्य के उपासकों को भ्रम है तथा वे उसकी उपासना करते हैं। आकाश में सात बड़े ग्रह है। सूर्य इन सभी में बड़ा तथा ज्योतिर्मय है तथा मनुष्य के जीवन के लिए इसकी विशेषता तथा उपयोगिता के विषय में बताने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए प्रकृति के उपासकों में सूर्य की उपासना सामान्य रूप से रही है। आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बड़ी ही सुन्दर विधि से चन्द्रमा तथा सूर्य के उपासकों पर उनके देवताओं की विवशता को स्पष्ट किया है कि वे पूजने योग्य क्यों नहीं हैं ?

[2]अर्थात वह सभी वस्तुऐं जिन को अल्लाह का साझी बनाते अथवा जिन की पूजा करते हो, उस से मैं दुखी हूँ। इसलिए कि इन में परिवर्तनशीलता है, कभी उदय होते हैं कभी अस्त होते हैं जो इस बात का प्रमाण है कि इनकी रचना हुई है तथा उनका रचयिता कोई और है जिसके आदेशाधीन ये हैं, जब यह स्वयं किसी के आदेशाधीन हैं।

[3]मुख का वर्णन इसलिए किया गया है कि मेरी आराधना तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) का लक्ष्य अल्लाह तआला है, जो आकाश तथा धरती का स्रष्टा है।

(८०) तथा उनसे उनकी जाति वालों ने विवाद करना प्रारम्भ कर दिया ।[1] (आदरणीय इब्राहीम) ने कहा कि क्या तुम अल्लाह के विषय में मुझसे विवाद करते हो यद्यपि उसने मुझे विधि बता दी है तथा मैं उन चीज़ों से जिनको तुम अल्लाह के साथ सम्मिलित करते हो, नहीं डरता परन्तु यह कि मेरा प्रभु ही कारण वश चाहे । मेरा प्रभु प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की परिधि में घेरे हुए है । क्या तुम फिर भी विचार नहीं करते ?

وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾

(८१) तथा मैं उस चीज़ से कैसे भय करूँ जिसे तुमने (अल्लाह का) साझीदार बना लिया जबकि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाने से नहीं डरते जिसका तुम्हारे पास अल्लाह ने कोई तर्क नहीं उतारा है । फिर इन दोनों पक्षों में कौन शान्ति के अधिक योग्य है ।[2] यदि तुम ज्ञान रखते हो ।

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾



---

[1]जब जाति वालों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का यह भाषण सुना जिसमें उनके (स्वयं कृत) देवताओं का खण्डन भी किया गया था, तो उन्होंने भी अपने तर्क प्रस्तुत करने प्रारम्भ कर दिये । जिनसे ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजकों ने भी अपने विश्वास के लिए कुछ तर्क बना रखे थे । जिसका दर्शन आज भी किया जा सकता है । जितने भी शिर्क से लिप्त विश्वास करने वाले लोग हैं, सभी ने अपने-अपने अनुयायियों को सन्तुष्ट करने के लिए ऐसे मोहरे खोज रखे हैं जिन्हें वे तर्क समझते हैं अथवा जिनसे कम से कम उनके अनुयायियों को अपने जाल में फंसाये रख सकते हैं ।

[2]एकेश्वरवादियों एवं मिश्रणवादियों में, एकेश्वरवादियों के पास तो एकेश्वरवाद के स्पष्ट प्रमाण हैं जब कि द्वैतवादी के पास अल्लाह की ओर से अवतरित कोई तर्क नहीं, मात्र निर्मूल भ्रम है अथवा व्यर्थ कल्पनायें । इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि शान्ति एवं मुक्ति के योग्य कौन होगा ?

(८२) जो लोग ईमान लाये तथा अपने ईमान को किसी मिश्रणवाद से लिप्त नहीं किया उन्हीं के लिए शान्ति है तथा वही सीधे मार्ग पर हैं।[1]

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾

(८३) तथा यह हमारा तर्क है जिसे हमने इब्राहीम को उनके समुदाय की तुलना में दिया।[2] हम जिसका पद चाहें बढ़ाते हैं। निश्चय तुम्हारा स्वामी विज्ञानी सर्वज्ञ है।

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

(८४) तथा हमने उन्हें (पुत्र) इसहाक़ एवं (पौत्र) याक़ूब प्रदान किया।[3] तथा प्रत्येक को सीधा

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ

---

[1]आयत में यहाँ ज़ुल्म से अभिप्राय मिश्रण है। जब यह आयत उतरी तो अल्लाह के रसूल के सहचरों ने इसका साधारण अर्थ (आलस्य, त्रुटि, पाप, क्रूरता आदि) समझा तथा व्याकुल हो गये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में आ कर कहने लगे कि हम में कौन है जिसने अत्याचार न किया हो ? आप ने कहा कि इसका अर्थ वह अत्याचार नहीं जो तुम ने समझा है अपितु इससे तात्पर्य शिर्क (मिश्रण) है जैसे आदरणीय लुकमान ने अपने पुत्र से कहा था।

﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

"निःसन्देह बहुदेववाद सबसे बड़ा अत्याचार है"। (सूरः *लुकमान*-१३) (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः *अल अनाम*)

[2]अर्थात अल्लाह तआला के एक होने का प्रमाण तथा तर्क जिस का कोई उत्तर इब्राहीम की जाति वाले न दे सके। तथा वह कुछ के निकट यह कथन था।

﴿وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾

अल्लाह तआला ने आदरणीय इब्राहीम के इस कथन की पुष्टि की तथा कहा।

﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ﴾

[3]अर्थात वृद्धा अवस्था में जब वह सन्तान के जन्म से निराश हो गये थे, जैसाकि सूरः अल-हूद आयत संख्या ७२ में है, फिर पुत्र के साथ ऐसे पौत्र की शुभ सूचना दी जो याक़ूब होगा, जिसके अर्थ में यह भावार्थ निहित है कि उसके पश्चात उनकी सन्तान का वंश चलेगा, इसलिए कि यह अक़ब (पीछे) शब्द से उत्पन्न है।

وَمِن ذُرِّيَّتِهِۦ دَاوُۥدَ وَسُلَيْمَٰنَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾

रास्ता दिखाया। तथा इससे पूर्व नूह को मार्ग दिखाया तथा उनकी संतान[1] में दाऊद एवं सुलैमान तथा अय्यूब एवं यूसुफ़ तथा मूसा एवं हारून को, तथा इसी प्रकार हम उपकर्मियों को प्रत्युपकार प्रदान करते हैं।

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿٨٥﴾

(८५) तथा ज़करिया एवं यहया तथा ईसा[2] एवं इलियास को, प्रत्येक सदाचारियों में थे।

وَإِسْمَٰعِيلَ وَٱلْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٨٦﴾

(८६) तथा इस्माईल और यसअ तथा यूनुस और लूत को, प्रत्येक को हम ने विश्ववासियों पर प्रधानता दी।

---

[1] ذرية अरबी भाषा के इस शब्द में सर्वनाम के समावेश को नूह की ओर संकेत कुछ विद्वानों ने स्वीकार किया है क्योंकि वही निकटवर्ती हैं। अर्थात आदरणीय नूह की सन्तान में से दाऊद तथा सुलैमान को तथा कुछ ने आदरणीय इब्राहीम को, क्योंकि सारा वर्णन उन्हीं के विषय में हो रहा है। परन्तु इस परिस्थिति में यह कठिनाई आती है कि फिर लूत का वर्णन इस सूची में नहीं आना चाहिए था क्योंकि वह इब्राहीम की सन्तान में नहीं हैं। वह उनके भाई हारान पुत्र आज़र के पुत्र अर्थात इब्राहीम के भतीजे थे। तथा इब्राहीम लूत के पिता नहीं, अपितु चाचा हैं। परन्तु सम्मान स्वरूप उन्हें इब्राहीम की संतान में सम्मिलित कर लिया गया है। इसका एक अन्य उदाहरण क़ुरआन करीम में है। जहाँ आदरणीय इस्माईल को याक़ूब की संतान के पूर्वज में सम्मिलित किया गया है, जबकि वह उनके चाचा थे। देखिये (*सूर: अल-बक़र:*-१३३)

[2] ईसा अलैहिस्सलाम का वर्णन आदरणीय नूह अथवा इब्राहीम की संतान में इसलिए किया गया है (यद्यपि उनके पिता नहीं थे) कि पुत्री की संतान भी पुरुष की संतान में सम्मिलित होती है। जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय हसन (रज़ी अल्लाहु अन्हु) (अपनी पुत्री आदरणीया फ़ातिमा (रज़ी अल्लाह अन्हा) के पुत्र को अपना पुत्र बताया « إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ ولَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ، مِنَ الْمُسْلِمِينَ ». (सहीह बुख़ारी किताबुस सुलह बाब क़ौलु अन्नबी लिलहसन बिन अली इब्नी हाज़ा सैय्यद) विस्तार पूर्वक जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर)

(८७) तथा उनके पिताओं तथा संतानों एवं भाईयों[1] में से, तथा हमने उनका निर्वाचन किया और उन्हें सीधा रास्ता दिखाया।

وَمِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾

(८८) यही अल्लाह का मार्ग है अपने भक्तों में से जिसे वह चाहता है, उसे मार्ग दर्शाता है तथा यदि वे लोग भी शिर्क (मिश्रण) करते तो उनके कर्म व्यर्थ हो जाते।[2]

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

(८९) इन्हीं को हमने किताब (धर्मशास्त्र) तथा धर्म-विधान एवं दूतत्व प्रदान किया और यदि

اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا



[1]पूर्वज से मूल तथा सन्तान से शाखायें तात्पर्य है अर्थात उनके मूल तथा शाखा एवं भाईयों में से भी बहुतों को हमने उच्च पद तथा मार्गदर्शन प्रदान किया। اجتباء का अर्थ है निर्वाचित करना तथा अपने विशेष भक्तों में गणना कर लेना तथा उन में एकत्रित कर लेना। यह अर्थ جبيت الماء في الحوض (मैंने जलाशय से जल एकत्रित कर लिया) से लिया गया है, अतः اجتباء से तात्पर्य अपने विशेष भक्तों में सम्मिलित करना होगा। اصطفاء (इस्तेफ़ा), تخليص (तख़लीस), اختيار (इख़्तेयार) इसी अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं जिन के कारक का रूप मुस्तफ़ा, मुजतबा, मख़लिस तथा मुख़्तार हैं। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अट्ठारह नबियों के नामों का वर्णन कर के अल्लाह तआला कह रहा है, यदि वे लोग भी बहुदेववाद में फंस जाते तो उनके सारे कर्म नष्ट हो जाते। जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूसरे स्थान पर सम्बोधित करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया।

﴿لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ﴾

"हे पैग़म्बर यदि तूने भी अल्लाह तआला के साथ किसी अन्य को मिश्रण किया, तो तेरे सारे कर्म नष्ट कर दिये जायेंगे।" (*सूरः अल-ज़ुमर-६५*)

यद्यपि पैग़म्बरों से शिर्क होना सम्भव नहीं। उद्देश्य अनुयायियों को शिर्क की भयानकता तथा विनाश से सतर्क करना है।

هٰؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكٰفِرِينَ ﴿٨٩﴾

यह लोग इसे न मानें[1] तो हमने ऐसे लोगों को तैयार कर रखा है जो इसका इंकार नहीं करेंगे ।[2]

أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ قُل لَّآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِينَ ﴿٩٠﴾

(९०) यही लोग है जिनको अल्लाह ने सत्य मार्ग दिखाया, अत: आप उनके मार्ग का अनुसरण करें,[3] आप कहिये कि मैं इस पर किसी प्रतिकार की माँग नहीं करता ।[4] यह विश्ववासियों के लिये मात्र स्मृति है ।[5]

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهِۦٓ إِذْ قَالُوا مَآ أَنزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّن شَىْءٍ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِى جَآءَ بِهِۦ

(९१) तथा उन्हें जिस प्रकार अल्लाह का सम्मान करना चाहिए था सम्मान नहीं किया, जब उन्होंने यह कहा कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कुछ नहीं उतारा ।[6] आप कहिये कि मूसा जो शास्त्र

---

[1]इससे तात्पर्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधी, मूर्तिपूजक तथा अधर्मी हैं ।

[2]इससे तात्पर्य मक्का से जाकर मदीने बसने वाले तथा मदीने के वासी मुसलमान तथा प्रलय पर्यन्त आने वाले ईमानवाले हैं ।

[3]इससे तात्पर्य उपरोक्त ईशदूत हैं । उनके अनुसरण का आदेश एकेश्वरवाद (तौहीद) के सम्बन्ध में तथा उन आदेशों एवं नियम में है जो निरस्त नहीं हुए । (फ़तहुल क़दीर) क्योंकि सभी धर्मों मे मूल विधान एक ही रहे हैं, यद्यपि कर्म तथा विधि में कुछ विभिन्नता रही । जैसाकि आयत ﴿شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصّٰى بِهِۦ نُوحًا﴾ (*सूर: अल-शूरा*-१३) से स्पष्ट है ।

[4]अर्थात सतर्क करने तथा धर्म की ओर आमन्त्रित करने का, क्योंकि मुझे इसका वह बदला ही पर्याप्त है जो परलोक में अल्लाह तआला की ओर से मिलेगा ।

[5]बुद्धि वाले इससे शिक्षा ग्रहण करें । यह क़ुरआन उनको अविश्वास तथा मिश्रण के अन्धकार से निकाल कर मार्गदर्शन का प्रकाश प्रदान करेगा तथा कुपथ की टेढ़ी राहों से बचाकर ईमान के सीधे मार्ग पर चलायेगा यदि कोई इससे शिक्षा प्राप्त करना चाहे, वरन "अंधे को अंधेरे में क्या दिखायी देगी" वाली बात होगी ।

[6]قدر (क़दर) का अर्थ अनुमान लगाने के हैं तथा यह किसी वस्तु के यर्थाथ एवं ज्ञान प्राप्त करने के अर्थ में प्रयोग होता है । अर्थात यह मक्का के मूर्तिपूजक रसूल को भेजने तथा किताब के उतरने का इंकार करते हैं जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उन्हें अल्लाह का सही ज्ञान नहीं अन्यथा तथ्य को अस्वीकार न करते । इसके अतिरिक्त आत्म ज्ञान न होने

तुम्हारे पास लाये जो ज्योति तथा मार्गदर्शन है उसे किसने उतारा जिसे तुम विभिन्न पृष्ठों में रखते हो,[1] जिसमें से कुछ व्यक्त करते

مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنتُمْ

---

के कारण दूतत्व तथा रिसालत से भी अनभिज्ञ रहे। तथा यह समझते रहे कि किसी मानव पुरुष पर अल्लाह की किताब किस प्रकार उतर सकती है ? जिस प्रकार अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया है।

﴿ أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنذِرِ النَّاسَ ﴾

"क्या यह बात लोगों के लिए आश्चर्यजनक है कि हमने उन्ही में से एक आदमी पर वह्यी (आदेश) उतार कर उसे लोगों को डराने के लिए नियुक्त कर दिया है ?" (*सूर: -यूनुस-२*)

अन्य स्थान पर फ़रमाया।

﴿ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَن يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَن قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴾

"मार्गदर्शन आ जाने के पश्चात लोग उसे स्वीकार करने से इस लिए रुक गये कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है ?" (*सूर: बनी इस्राईल-९४*)

इसका कुछ विस्तार इससे पूर्व की आयत संख्या ८ की व्याख्या में गुज़र चुका है। व्याख्याधीन आयत में भी उन्होंने अपने इसी विचार के आधार पर इन बातों को नकारा है कि अल्लाह तआला ने किसी मनुष्य पर कोई किताब उतारी है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया यदि ऐसी बात है तो पूछो कि मूसा पर तौरात किसने उतारी थी ? (जिसको ये मानते हैं)

[1]आयत की उपरोक्त व्याख्यानुसार अब यहूदियों को सम्बोधित करके कहा जा रहा है कि तुम इस किताब को विभिन्न पृष्ठों में रखते हो, जिनमें से जिनको चाहते हो प्रकाशित करते हो जिनको चाहते हो छिपा लेते हो। जैसे पत्थरों से मार कर दण्डित करने का नियम अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुणों की बात है। हाफ़िज इब्ने कसीर तथा इमाम इब्ने जरीर तबरी आदि ने يجعلونه و يبدونها वाक्य को प्राथमिकता दी है तथा तर्क यह दिया है कि यह मक्की आयत है, इसमें यहूदियों को सम्बोधित किस प्रकार किया जा सकता है ? तथा अन्य कुछ व्याख्याकारों ने सम्पूर्ण आयत को यहूदियों से सम्बन्धित माना है । इस में प्रारम्भ से ही दूतत्व तथा ऋषित्व का जो इंकार है, उसे यहूदियों की हठधर्मी, ईर्ष्या तथा द्वेष पर आधारित कथन सिद्ध किया है अर्थात इस आयत की व्याख्या में व्याख्याकारों के तीन मत हैं। एक गुट पूरी आयत यहूदियों से, दूसरे लोग पूरी आयत

وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾

तथा अधिकतर छुपाते हो तथा तुम्हें वह ज्ञान दिया गया जिसे तुम तथा तुम्हारे पूर्वज नहीं जानते थे।[1] आप कहिए कि, अल्लाह,[2] फिर उन्हें उनके कुरेद में खेलते छोड़ दीजिए।

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾

(९२) यह भी एक शुभशास्त्र है, जिसे हमने उतारा है, अपने से पूर्व के (धर्मशास्त्रों) की प्रमाणकारी है। ताकि आप मूल नगरी (मक्का) तथा उसके आस-पास (के नगरों अर्थात सम्पूर्ण मानव जगत) को सचेत करें, तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही लोग इसे मानेंगे तथा वही अपनी नमाज़ों कि रक्षा करेंगे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ

(९३) उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये अथवा कहे कि मेरी ओर देववाणी आई है जबकि उसकी ओर कुछ नहीं आयी। तथा जिसने कहा कि जिस प्रकार अल्लाह ने उतारा मैं भी उतारूँगा, यदि आप अत्याचारियों को मौत की घोर यातना में देखेंगे।[3] जब यमदूत अपने

---

का मक्का के मूर्तिपूजकों से तथा तीसरे गुट आयत के प्रारम्भिक भाग को मूर्तिपूजको से सम्बन्धित तथा تجعلونه से यहूदियों से सम्बन्धित सिद्ध करते हैं। والله أعلم

[1]यहूदियों के विषय में मानने की स्थिति में इसकी व्याख्या होगी कि तुम्हें तौरात द्वारा बताया गया तथा अन्य परिस्थिति में क़ुरआन द्वारा।

[2]यह من أنزل किसने उतारा का उत्तर है।

[3]अत्याचारों से तात्पर्य सभी प्रकार के अत्याचारी हैं। तथा इसके अन्तर्गत अल्लाह की किताब के निवर्ती तथा दूतत्व के झूठे दावेदार सभी आते हैं। غمرات से मृत्यु के संकट तात्पर्य है। "फ़रिश्ते (यमदूत) हाथ बढ़ा रहे होंगे।" अर्थात प्राण निकालने के लिए। اليـــوم (आज) से तात्पर्य प्राण निकालने का दिन है तथा यही यातना के प्रारम्भ होने का समय भी है, जिसका प्रारम्भ क़ब्र (समाधि) से है। इससे सिद्ध होता है कि क़ब्र में यातना

عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

हाथ लपकाये होते हैं कि अपने प्राण निकालो, आज तुम्हें अल्लाह पर अनुचित आरोप लगाने तथा अभिमान पूर्वक उसकी आयतों का इंकार करने के कारण अपमानकारी प्रतिकार दिया जायेगा।[1]

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ۚ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गये।[2] जैसे तुम्हें प्रथम बार पैदा किया तथा तुम्हें जो दिया उसे अपने पीछे छोड़ आये तथा तुम्हारे सिफ़ारिशी हमें नहीं दिख रहे हैं, जिन को तुम अपने कार्यों में हमारा साभी समभ रहे थे। नि:संदेह तुम्हारे संबन्ध कट गये तथा तुम्हारा विचार तुमसे खो गया।



---

सत्य है। वरन् हाथ फैलाने तथा जान निकालने का आदेश देने के साथ इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं थी कि आज तुभे अपमानित होने की यातना दी जायेगी। ध्यान रहे क़ब्र से तात्पर्य बर्ज़ख़ का जीवन है सांसारिक एवं परलोक के मध्य का जीवन जो मृत्यु से प्रलय होने तक का है। यह बर्ज़ख़ी जीवन कहलाता है। चाहे उसे नरभक्षी ने खा लिया हो अथवा उसका शव समुद्र की लहरों में समा गया हो अथवा उसे जला कर राख कर दिया हो अथवा क़ब्र में दफ़ना (गाड़) दिया हो यह बर्ज़ख़ का जीवन है जिसमें यातना देने में अल्लाह तआला सामर्थ्य रखता है।

[1]अल्लाह पर भूठ बोलने में धर्मशास्त्रों तथा ईशदूतों के भेजे जाने का इंकार भी आता है। तथा दूतत्व का भूठा दावा भी। इसी प्रकार दूतत्व एवं ऋषित्व का इंकार तथा भूठलाना भी है। इन दोनों के कारण से उन्हें अपमान जनक दंड दिया जायेगा।

[2] فرادى अरवी भाषा में فرد का बहुवचन है, जिस प्रकार سكارى बहुवचन है سكران का, तथा كسالى बहुवचन है كسلان का। इसका अर्थ यह है कि तुम अलग-अलग एक-एक कर के मेरे पास आओगे। तुम्हारे पास न धन होगा न संतान तथा न वह देवता, जिनको तुम ने अल्लाह का साभीदार तथा अपना सहायक समभा था। अर्थात इन में से कोई भी वस्तु तुम को वहां लाभ पहुचाने में असमर्थ है। अगले वाक्य में इन्हीं विषयों की अत्यधिक विवरण है।

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٩٥﴾

(९५) अल्लाह ही बीजों एवं गुठलियों को फाड़कर अंखुआ निकालता है।[1] वह सजीव को निर्जीव से[2] एवं निर्जीव को सजीव से निकलता है,[3] वही अल्लाह है, फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो ?

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ

(९६) वह पौ फाड़ने वाला है[4] तथा उसने रात्रि को विश्राम के लिये[5] एवं सूर्य तथा चन्द्रमा को

---

[1]यहाँ से अल्लाह तआला की अतुलनीय शक्ति तथा सामर्थ्य का वर्णन प्रारम्भ हो रहा है। फ़रमाया, अल्लाह तआला दाने तथा गुठली को, जिसे किसान धरती के अन्दर दबा देता है, उसे फाड़कर अनेक रंग-रूप के वृक्ष उगाता है। धरती एक होती है, पानी भी जिससे खेतों की सिचाई होती है, एक ही प्रकार का होता है। परन्तु जिस-जिस चीज़ के वे दाने तथा गुठलियाँ होते हैं। उनके अनुसार अल्लाह तआला उनसे विभिन्न प्रकार के अनाज तथा फलों के वृक्ष उगाता है। क्या अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई है, जो इस कार्य को करता है अथवा कर सकता है ?

[2]अर्थात दाने अथवा गुठलियों से वृक्ष उगाता है, जिस में जीवन होता है तथा वह बढ़ाता, फुलाता तथा फल अथवा अनाज देता है। अथवा सुगन्धित रंग-बिरंगे फूल, जिनको देख कर सूँघ कर मनुष्य प्रफुल्लता तथा आनन्द का आभास करता है। अथवा वीर्य तथा अन्डे से मनुष्य तथा पक्षियाँ पैदा करता है।

[3]अर्थात पक्षियों के अण्डे जो मृतप्राय हैं। जीवित तथा मृत की तुलना ईमानवालों तथा काफ़िरों से भी की गयी है अर्थात ईमानवालों के घर काफ़िरों तथा काफ़िरों के घर में ईमान वाले पैदा करता है।

[4]अन्धकार तथा प्रकाश का उत्पन्न करने वाला भी वही है। वह रात के अंधेरे से उषा काल का प्रकाश पैदा करता है जिससे प्रत्येक वस्तु प्रकाशमान हो जाती है।

[5]अर्थात रात को अंधकार में बदल देता है, ताकि लोग प्रकाश की सभी व्यस्तता को समाप्त करके विश्राम कर सकें।

تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٩٦﴾

हिसाब लगाने के लिये बनाया।[1] यह निर्धारण है परम प्रभावी ज्ञाता (अल्लाह) का।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٩٧﴾

(९७) तथा उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये ताकि थल जल के अंधेरों में उनके द्वारा रास्ते का पता लगाओ,[2] हमने उन लोगों के लिए निशानियों का विवरण कर दिया है जो ज्ञान रखते हैं।

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَصَّلْنَا

(९८) तथा उसी ने तुम्हें एक प्राण से उत्पन्न किया फिर तुम्हारा एक स्थाई तथा एक समर्पण

---

[1]अर्थात दोनों के लिए एक माप का निर्धारण है, जिसमें वे किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं कर सकते। दोनो के अपने-अपने पथ हैं जिस पर वे सर्दी-गर्मी सभी परिस्थितियों में अग्रसर हैं, जिसके आधार पर सर्दी में दिन छोटे तथा रात्रि बड़ी तथा गर्मी में इसके विपरीत दिन लम्बे तथा रात्रि छोटी हो जाती हैं। जिसका विस्तृत वर्णन सूरः *यूनुस*-५, सूरः *यासीन*-४० तथा सूरः *आराफ*-५४ में भी है। इसका यह अर्थ भी लिया गया है कि सूर्य एव चन्द्रमा से दिन-रात तथा महीने और वर्ष का हिसाब लगाया जाता है। उपरोक्त अनुवाद इसी अर्थ को लेकर किया गया है।

[2]यहाँ सितारों का एक लाभ तथा लक्ष्य बताया गया है तथा इस के अन्य और भी दो लक्ष्य हैं जो अन्य स्थान पर वर्णन किये गये हैं। आकाशों की शोभा तथा शैतानों के दण्ड। अर्थात यदि शैतान आकाश पर जाने का प्रयत्न करते हैं तो यह उन पर अंगारे बन कर गिरते हैं। कुछ सलफ़ का कथन है। "इन तीन बातों के अतिरिक्त इन सितारों के विषय में यदि कोई व्यक्ति विश्वास रखता हो तो वह त्रुटि पर है तथा अल्लाह पर झूठ बाँधता है।"

इससे ज्ञात होता है कि हमारे देश में जो ज्योतिष विज्ञान की चर्चा है, जिसमें सितारों के द्वारा भविष्य की घटनाओं तथा मनुष्य के जीवन अथवा जगत में उनके प्रभाव का दावा किया जा रहा है, वह निराधार है तथा धार्मिक नियमों के विरुद्ध भी। अतः एक हदीस में इसे जादू का ही एक प्रभाग बताया गया है।

« مَنِ اقْتَبَسَ عِلْمًا مِنَ النُّجُومِ اقْتَبَسَ شُعْبَةً مِنَ السِّحْرِ زَادَ مَا زَادَ ».

"जो व्यक्ति ज्योतिष विज्ञान प्राप्त करता है। वह एक प्रकार का जादू सीखता है।" (हस्सनहु अलबानी सहीह अबू दाऊद संख्या ३९०५)

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

स्थान है।[1] हमने उनके लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर दिया है जो समझते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ

(९९) तथा वही है जिसने आकाश से वर्षा की फिर हमने उससे प्रत्येक प्रकार के पौधे उगाये[2] फिर उससे हरियाली निकाली[3] जिससे हम गुथे हुये अन्न [4] तथा खजूर के गाभ से लटकते हुये गुच्छे[5] एवं अंगूरों तथा जैतून और अनार के बाग़[6] (उद्यान) निकलते हैं जो समरूप एवं प्रारुप होते हैं।[7] उनके फलों को देखो जब फलें

---

[1]अधिकतर व्याख्याकारों के विचार से مُستقر (मुस्तकर) से गर्भाशय तथा مُستودع से पिता की पीठ तात्पर्य है। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[2]यहाँ से उसकी आश्चर्यजनक कारीगरी का वर्णन हो रहा है अर्थात वर्षा का पानी, जिससे वह हर प्रकार की वनस्पति उगाता है।

[3]इससे तात्पर्य हरी शाखायें तथा अंकूर हैं जो धरती में दबे हुए दाने से अल्लाह तआला धरती के ऊपर उगाता है, फिर वह वृक्ष का आकार तथा प्रकार ग्रहण करता है।

[4]उन हरी शाखाओं से ऊपर तले चढ़े हुए दाने तथा बालियाँ निकलते हैं। जैसे जौ, जवार, बाजरा, मकई, गेहूँ तथा चावल आदि।

[5] قِنْــوٌ का बहुवचन قِنْوانٌ है। तात्पर्य गुच्छे हैं। طلع खजूर का प्रारम्भिक रूप है, यही बढ़कर गुच्छा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर खजूर तैयार होता है। دانيةٌ से तात्पर्य वह गुच्छे हैं जो निकट हों। तथा कुछ गुच्छे दूर भी होते हैं जिन तक हाथ नहीं पहुँचता है। अनुग्रह के रूप में निकटता का वर्णन कर दिया गया है कि कृतज्ञता व्यक्त करो इसके लिए तथा जिसका अर्थ है منها دانيةٌ و منها بعيدة "उनमें से कुछ निकट तथा कुछ दूर हैं।" بعيدة लोप है। (फ़तहुल क़दीर)

[6]बाग़, जैतून तथा अनार इन सभी का सम्बन्ध वनस्पति से है अर्थात فأخرجنا بِه جنّات अर्थात वर्षा के जल से हम ने अंगूर के बाग़ तथा जैतून एवं अनार पैदा किये।

[7]अर्थात कुछ गुणों में एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं तथा कुछ में नहीं मिलते-जुलते। अथवा उनके पत्ते एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं, फल नहीं मिलते अथवा रंग रूप में मिलते-जुलते हैं परन्तु स्वाद में नहीं मिलते-जुलते।

إِذَآ أَثْمَرَ وَيَنْعِهِۦٓ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكُمْ لَءَايَٰتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٩٩﴾

तथा उनका पकना, नि:संदेह इसमें उन लोगों के लिये चिन्ह (निशानियाँ) हैं[1] जो विश्वास रखते हैं।

وَجَعَلُوا۟ لِلَّهِ شُرَكَآءَ ٱلْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ ۖ وَخَرَقُوا۟ لَهُۥ بَنِينَ وَبَنَٰتٍۭ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٠٠﴾

(१००) तथा लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी बना दिया है, जबकि उसी ने उनको पैदा किया है, तथा उस (अल्लाह) के लिये पुत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ लीं बिना किसी ज्ञान के, वह (अल्लाह) इनके वर्णित गुणों से पवित्र एवं (श्रेष्ठ) है।

بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُۥ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُن لَّهُۥ صَٰحِبَةٌ ۖ وَخَلَقَ كُلَّ شَىْءٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٠١﴾

(१०१) यह आकाशों एवं धरती का अनुपम उत्पत्तिकर्ता है, उसके संतान कहाँ हो सकती है ? जबकि उसकी कोई पत्नी नहीं है वह प्रत्येक वस्तु का रचयिता[2] तथा सर्वज्ञ है।

ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ خَٰلِقُ كُلِّ شَىْءٍ فَٱعْبُدُوهُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٠٢﴾

(१०२) वही अल्लाह तुम्हारा पोषक है, उसके सिवाये कोई पूज्य नहीं, प्रत्येक वस्तु का रचयिता है, अत: उसी को पूजो, तथा वह प्रत्येक वस्तु का व्यवस्थापक है।

---

[1]वर्णन की हुई सभी चीज़ों में अखिल जगत के स्रष्टा की असीम शक्ति तथा उसकी बुद्धिमत्ता एवं कृपा के प्रमाण हैं।

[2]अर्थात जैसे अल्लाह सभी उपरोक्त वस्तुयें उत्पन्न करने में अकेला है कोई उसका साझी नहीं उसी प्रकार वह इस योग्य है कि उस की अकेले वंदना की जाये किसी और को उसकी वंदना में मिश्रित न किया जाये। परन्तु लोगों ने एक अकेले को त्याग कर देवों को उसका साझी बना रखा है जब कि वह स्वयं अल्लाह की रचना हैं। मिश्रणवादी वन्दना तो मूर्तियों अथवा समाधियों में गड़े शव की करते हैं। किन्तु कहा गया है कि उन्होंने देवों को अल्लाह का साझी बना रखा है। वास्तव में देवों से तात्पर्य राक्षस हैं तथा उन्हीं के कहने पर मिश्रण किया जाता है अत: मानो कि उन्हीं की वंदना की जाती है। इस विषय को पवित्र क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णित किया गया है। (उदाहरणार्थ सूर: *निसा* -११७, सूर: *मरियम*-४४, सूर: *यासीन*-६०, सूर: *सबा*-४१)

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ

(१०३) आँखें उसे देख नहीं सकतीं[1] और वह सभी निगाहों को देखता है तथा वह सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है।

قَدْ جَاءَكُم بَصَائِرُ مِن رَّبِّكُمْ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ

(१०४) तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास तर्क आ गये हैं तो जो देखेगा वह अपने भले के लिये (देखेगा) तथा जो अंधा बन जायेगा वह अपना बुरा करेगा[2] तथा मैं तुम्हारा रक्षक

---

[1] بصر का बहुवचन أبصار (दृष्टियाँ) है अर्थात मानव दृष्टि अल्लाह की यथार्थता का अवलोकन नहीं कर सकता। यदि इससे तात्पर्य नेत्र दृष्टि है तो इसका सम्बन्ध संसार से होगा अर्थात भौतिक दृष्टि से कोई अल्लाह को नहीं देख सकता। परन्तु सहीह तथा निरन्तर हदीस के कथन से ज्ञात होता है कि परलोक में ईमान वाले अल्लाह तआला को देखेंगे तथा स्वर्ग में भी उसके दर्शन से सम्मानित होंगे। इसलिए मुतजिला का इस आयत से यह भाव लेना कि अल्लाह तआला को कोई भी नहीं देख सकता, दुनिया में न आख़िरत में उचित नहीं, क्योंकि इस नकार का सम्बन्ध मात्र दुनिया से है। इसीलिए आदरणीय आयशा (रज़ी अल्लाहु अन्हा) भी इस आयत से यह भाव निकाल कर कहा करती थीं, जिस व्यक्ति ने भी यह दावा किया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (मेराज की रात्रि) अल्लाह तआला के दर्शन किये, उसने झूठ बोला है। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: *अल-अनाम*) क्योंकि इस आयत के आधार पर पैग़म्बर सहित कोई भी अल्लाह को देखने का सामर्थ्य नहीं रखता। परन्तु परलौकिक जीवन में यह दर्शन सम्भव होगा। जैसाकि अन्य स्थान पर क़ुरआन ने इसके पक्ष में फ़रमाया है।

﴿ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۞ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴾

"कई मुख उस दिन तरुण होंगें, अपने प्रभु की ओर देख रहे होंगे।" (सूर: *अल-क़ियाम:*-२२,२३)

[2] بصيرة का बहुवचन بصائر है। जो वास्तव में दिल के प्रकाश का नाम है। यहाँ पर तात्पर्य वे तर्क तथा युक्तियाँ हैं जो क़ुरआन ने अनेक स्थान पर दुहराई हैं तथा जिनको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हदीसों में वर्णन की हैं। जो इन तर्कों को देख कर मार्गदर्शन पा लेते हैं, उसमें उन्हीं का लाभ है, नहीं अपनाता तो उसी की हानि है। जैसे फ़रमाया।

﴿ مَّنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ﴾

रक्षक नहीं हूँ ।[1]

وَكَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ وَلِيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

(१०५) इसी प्रकार हम आयतों (पवित्र क़ुरआन की ऋचाओं) को फेर-फेर कर वर्णित कर रहें हैं ताकि वे कहें कि आपने पढ़ा है[2] और ताकि उन लोगों के लिये जो जानते हैं हम उसे भली-भाँति प्रकाशित कर दें ।

اتَّبِعْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ

(१०६) आप अपने पालनहार के आदेश (प्रकाशना) का अनुसरण करें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं तथा मिश्रण-वादियों से विमुख हो जायें ।

---

इसका भी भावार्थ वही है जो प्रस्तुत आयत का है ।

[1]अपितु केवल संदेशवाहक, निवेदक, तथा शुभसूचक हूँ । मार्ग दिखलाना मेरा कार्य है पर मार्ग पर चला देना यह अल्लाह के वश में है ।

[2]अर्थात हम तौहीद (एकेश्वरवाद) की युक्तियों को इस प्रकार स्पष्ट करके तथा विभिन्न रूप से वर्णन करते हैं कि मूर्तिपूजक यह कहने लगते हैं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहीं से पढ़ कर तथा सीख कर आये हैं । जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया ।

﴿ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ افْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ ۖ فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ﴾ ﴿ وَقَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا ﴾

"काफ़िरों ने कहा, यह क़ुरआन तोउसका अपना गढ़ा हुआ है, जिस पर दूसरों ने भी इसकी सहायता की है । यह लोग ऐसा दावा करके अत्याचार तथा झूठ पर उतर आये हैं । इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा कि यह पूर्व के लोगों की कहानियाँ है जिसको उसने लिख रखा है ।" (*सूर: अल-फ़ुरक़ान-४,५*)

यद्यपि बात यह नहीं, जिस प्रकार यह समझते अथवा दावा करते हैं, अपितु उद्देश्य इस विस्तार से समझदार लोगों के लिए स्पष्ट तथा व्याख्या करना है ताकि उन पर सत्यता पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाये ।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۗ وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿١٠٧﴾

(१०७) तथा यदि अल्लाह चाहता तोयह शिर्क (अल्लाह के साझीदार) न करते।[1] तथा हम ने आपको इन लोगों का संरक्षक नहीं बनाया, तथा न आप उन पर अधिकार रखने वाले हैं।[2]

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِم مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) तथा जो अल्लाह से अन्य को पुकारते हैं उनकी निन्दा न करो अन्यथा असीम होकर अनजाने वे अल्लाह की निन्दा करेंगे,[3] इसी प्रकार हमने प्रत्येक समुदाय के लिये उनके कर्म को सुशोभित बना दिया है, फिर उन्हें अपने पालनहार की ओर ही लौटना है। अतः वह उन्हें उस से सूचित करेगा जो वे करते रहे।

---

[1]इस बिन्दु का स्पष्टीकरण पहले किया जा चुका है कि अल्लाह की इच्छा अन्य चीज़ है तथा उसकी प्रसन्नता तो इसी में है कि उसके साथ किसी को सम्मिलित न किया जाये। फिर भी मनुष्य को इस पर बाध्य नहीं किया है क्योंकि बाध्यता से मनुष्य की परीक्षा न हो पाती, वरन् अल्लाह तआला के पास तो ऐसी शक्ति है कि वह चाहे तो कोई व्यक्ति शिर्क करने के सामर्थ्य ही नहीं रख सके। (पुनः देखिये *सूरः अल-बक़रः*-२५३ तथा *सूरःअल-अनाम* ३५ की व्याख्या)

[2]यह विषय भी क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है। उद्देश्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की धार्मिक नियन्त्रण तथा सतर्क करने वाली पदवी का स्पष्टीकरण है जो रिसालत की माँग है तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम केवल इसी सीमा तक प्रभारी थे। इससे अधिक आप के पास यदि अधिकार होते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने प्रिय चाचा अबू तालिब को अवश्य मुसलमान कर लेते, जिन के इस्लाम धर्म को स्वीकार करने की आप तीव्र इच्छा रखते थे।

[3]यह निषेध की विधि के इस नियम पर आधारित है कि यदि किसी उचित कार्य से उससे बड़ी ख़राबी उत्पन्न होती हो, तो वहाँ पर उचित को न करना ठीक तथा श्रेष्ठ है। इस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया है कि तुम किसी के माता-पिता को गाली मत दो कि इस प्रकार तुम स्वयं अपने माता-पिता के ग़ाली का कारण बन जाओगे। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान बाब बयानुल कबायर व अकबरिहा) इमाम शौकानी लिखते हैं कि निषेध विधि का यह मूलाधार है। (फ़तहुल क़दीर)

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾

(१०९) तथा उन्होंने बलपूर्वक अल्लाह की शपथ ली[1] कि उनके पास कोई निशानी आई[2] तो अवश्य मान लेंगे, आप कहिये कि आयतें अल्लाह के पास हैं[3] तथा आपको क्या पता कि वह (निशानियाँ) आ जायें तब भी वह नहीं मानेंगे।

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١١٠﴾

(११०) तथा हम उनके दिलों एवं आँखों को फेर देंगे जिस प्रकार उन्होंने प्रथम इसके प्रति विश्वास नहीं किया,[4] तथा उनको उनकी दुष्टता (के अंधकार) में चकित रहने देंगे।



---

[1] جهد أيمانهم أي حلفوا أيمانا مؤكدة बड़ा बल देकर सौगन्ध खायी।

[2] अर्थात कोई बड़ा चमत्कार, जो उनकी इच्छानुसार हो, जैसे मूसा की छड़ी, मृतक को जीवन तथा समूद की ऊंटनी जैसा।

[3] अर्थात उनकी चमत्कार सम्बन्धी माँगे मात्र शत्रुता एवं ईर्ष्या के कारण हैं, मार्गदर्शन प्राप्त करने की इच्छा से नहीं है। फिर भी इन लक्षणों को प्रकाशित करना अल्लाह तआला के वश में है, वह चाहे तो उनकी माँग पूरी कर दे। कुछ कथनों से ज्ञात होता है कि मक्का के मूर्तिपूजकों ने माँग की थी कि सफ़ा पर्वत (जो मक्का में हरम के निकट है) स्वर्ण का बना दिया जाये, तो वह ईमान ले आयेंगे। जिस पर जिब्रील ने आकर कहा कि यदि उसके पश्चात भी वह ईमान न लाये, तो उनका विनाश कर दिया जायेगा, जिसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पसन्द नहीं किया। (इब्ने कसीर)

[4] इसका अर्थ यह है कि जब पहली बार ईमान नहीं लाये, तो उसका प्रभाव यह हुआ कि उनके आगे भी ईमान लाने की सम्भावना समाप्त हो गई। दिलों तथा नेत्रों को फेर देने का भावार्थ यही है। (इब्ने कसीर)